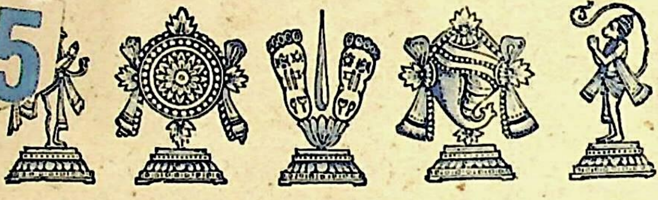
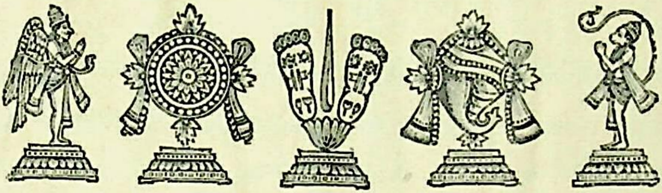


श्री भगवत्पूजन प्रकार:

श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य,
शमदमाद्यनन्तकल्याणगुणगणालंकृत, श्रीमद-
खण्डनवखण्ड पाषण्डाटोपखण्डनमार्तण्ड-
ज्ञानकोदण्ड प्रेमकाण्डकलिताचार्यवर्य,
श्रीवान्धवाधीशरीवाँमहाराजादि
नृपकिरीटकोटीडितश्रीलक्ष्म
ण रामसिंहासनाधीश्वर
श्रीसिद्धान्तशिरोमणि
राजगुरुश्री १००८
श्रीबदरी प्रपन्ना-
चार्यस्वामिवर्यै

'विरचित:

पं० चक्रधरेण संगृहीतः मुद्रितश्च
सं० २००६



श्री भगवत्पूजन प्रकारः

श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य,
शमदमाद्यनन्तकल्याणगुणगणालंकृत, श्रीमद-
खण्डनवखण्डपाषण्डाटोपखण्डनमार्तण्ड-
ज्ञानकोदण्डप्रेमकाण्डकलिताचार्यवर्य,
श्रीबान्धवाधीशरीवाँमहाराजादि
नृपकिरीटकोटीडितश्रीलक्ष्म
णारामसिंहासनाधीश्वर
श्रीसिद्धान्तशिरोमणि
राजगुरुश्री १००८
श्रीबदरी प्रपन्ना-
चार्यस्वामिवर्यैं

'विरचितः

पं० चक्रधरेण संगृहीतः मुद्रितश्च
सं० २००६

* श्रीमते रामानुजाय नमः *

भूमिका

इस अपार सन्सार में केवल भगवद्भक्ति ही सर्व शास्त्रों से श्रेय का मार्ग प्रतिपादित है, 'स्मर्त्तव्यः कीर्त्तितव्यश्च हरिः सर्वत्र सर्वदा, यद्यपि श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः," इत्यादि श्लोकों से परमात्मा की भक्ति नवधा वर्णित है तथापि वह भक्ति "शैली दारुमयी लौही लेप्या .लेख्या च सैकती मनोमयी मणिमयी प्रतिमाचाष्टविधाः स्मृताः इन अष्ट प्रकार की मूर्तियों के सेवन अर्चन में ही सर्वथा निर्भर है, क्योंकि परमात्मा स्वयं निज मुखारविन्द से उपदेश भी किये हैं "मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसिमे" इत्यादि प्रमाणों से भक्त्याराधन ही सर्वोत्तमतया निष्पादन किया गया है तथापि उक्त साधन मार्ग इतना जटिल और सूक्ष्म है कि जिसमें स्वतः प्रवृत्ति होना हाँथों दूर है। अतएव भक्ति मार्ग तथा भक्ति स्वरूप के परिचयार्थ श्री गुरु चरण शरण ही सुगम एवं खुला मार्ग है क्योंकि संस्काराः पञ्च कर्त्तव्याः ब्राह्मणस्य विधानतः, तापः पुण्ड्रं तथा नाम मन्त्रो यागश्च पञ्चमः" इस से भी प्रथम आचार्य्य की प्रपत्ती ही सिद्ध है तथा भगवदाज्ञा भी है "नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् ॥ मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान् भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा" अन्यच्च "विजित हृषीक वायु भिरदान्त मनस्तुरगं यइह यतन्ति मतिलोलमुपायखिदः, व्यसनशतान्विता समवहाय गुरोश्चरणं वणिज इवाज सजन्त्य कृत कर्णधराजलधौ ?"। अतएव इस ग्रन्थ में भगवद्भक्ति, गुरुप्रपत्ति, पञ्च सस्कार कर्मादि लोक के उपकारार्थ उल्लेख किया गया है। आशा है कि भक्त सज्जन जन इसको साद्यन्त अवलोकन कर श्री भगवदाचार्य्य चरणारविन्द के मिलिन्द (भ्रमर) बनैंगे तथा इसमें जो प्रमाद से कुछ त्रुटियां रह गई हों उनको सुधार कर क्षमा करैं गे।

लेखक—पं० चक्रधर प्रपन्न शुक्ल।



सर्वागमार्णव मगाध मलं प्रमथ्य यःस्तोत्ररत्नमिदमुद्ध तवाननर्घ्यम् ।
सोऽयं महर्षिरभयप्रद पाणिपद्मः श्रीमद्गुरुर्विजयते बदरीप्रपन्नः ।।

कृष्ण-प्रेस, प्रयाग ।

❀ श्रीमते रामानुजाय नमः ❀

प्रातरुत्थाय स्वाचार्यं ध्यात्वा श्रीहरिः शरणमितित्रिवारमुच्चार्य्य गुरुपरम्परादि दिव्यप्रवन्धान् पठित्वा दैनिकविधिं विधाय ।

श्रीमतेरामानुजायनमः

अथ उद्र्ध्वंपुण्ड्र तिलक धारणप्रकारः ।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्रुतिनोदितम् ।
ऊद्र्ध्वपुण्ड्रविहीनस्य सर्वं तन्निष्फलं भवेत् ॥ १ ॥

परम पूज्य श्रीहारीत महर्षि का वचन है, कि वैदिक स्मार्त यावत् कर्मानुष्ठान हैं उन सबके पूर्व ही ऊर्ध्व पुण्ड्र धारण परमावश्यक है इसी कारण से हम इसका पूर्व उल्लेख करते हैं, अति वलवती आशा है, कि सहर्ष सादर महात्मा लोग अवश्य ही स्वीकार करेंगे ।

जो असमर्थ पुरुष द्वादश १२ पुण्ड्रों को धारण नहीं कर सकते उनको उचित है कि दो पुण्ड्र तो अवश्य ही धारण करें और प्रति दिन जितने बार स्नान करें तब अवश्य ही ऊद्र्ध्वंपुण्ड्र धारण करें ।

प्रथम शुद्ध स्थान में पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठ के, ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः इत्यादि मंत्रों से आचमन करे। नारिकेल का अर्द्धभाग अथवा सुवर्ण चाँदी आदि धातुओं के गोकर्णाकार तीर्थाकार में शुद्ध जल रक्खें। आचमनी से थोड़ा जल लेकर वामे हस्ततल को

ॐ वीर्य्यायस्त्रायफट् इस मंत्र से धो डाले, प्रणव मंत्रसे श्वेत मृत्तिका का पांसा वाम हस्त में रक्खे--

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां त्वामिहोपह्वये श्रियम् ॥

इस मंत्र से पांसे पर थोड़ा जल छोड़े, अस्त्र मंत्र से वामहस्त स्थित पांसे के चारों ओर चुटकी बजाते हुए रक्षा करे। प्रणव मंत्र से घिसे उस मृत्तिका में षटकोण यंत्र बनाकर मध्य भाग में नृसिंह बीजाक्षर का लिखे। फिर दक्षिण हाथ से उस घिसी हुई मिट्टी को ढांककर, (विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि यो अस्कभयादुत्तरं सधस्थंविचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः) ॐ पौं नमः परायपरमेष्ठ्यात्मनेनमः ॐ यां नमः पराय पुरुषात्मनेनमः ॐ रां नमः परायविश्वात्मनेनमः ॐ वां नमः परायनिवृत्यात्मने नमः ॐ लां नमः पराय सर्वात्मने नमः इन दोनो मंत्रों से अभिमंत्रित के अनन्तर "भगवान् पवित्रं वासुदेवः पवित्रं शतधारं सहस्रधारमपरिमितधार मरिष्ट मच्छिद्रमच्युतमनन्तमक्षय मव्ययम्परम्पवित्रं भगवान् वासुदेवः पुनातु" इस शतधार मंत्र से पुनः थोड़ा जल छोड़कर तर्जनी अंगुली से मिलाते हुये भगवत्पादारविन्दों का ध्यान करे। फिर द्वादशाक्षर मंत्र उच्चारण करते हुए "भगवन्नभीष्टं में देहि ऐसी भगवान से प्रार्थना करे" विष्णोरराटमसि, विष्णोः पृष्ठमसि, विष्णोश्श्नप्त्रेस्थो, बिष्णोस्स्यूरसि, विष्णोर्ध्रुवमसि, वैष्णवमसि, विष्णवेत्वा" इन सात वैष्णव मंत्रों से मृत्तिका का अभिमंत्रण करे। अनन्तर तर्जनी अंगुली से लेकर प्रणव से थोड़ा मस्तक पर रखे। पश्चात अंगुली के नख से रहित तत् तत्स्थानानुरूप सुन्दर कोण के बिना भगवच्चरणारविन्द के समान नीचे का भाग सङ्कुचित और ऊपर का भाग विस्तृत श्री के दोनों तरफ अन्तराल छोड़कर तीन अंगुल चौड़ा नासिका मूलसे लेकर केश पर्यन्त ॐ केशवाय नमः इस

नाम का उच्चारण करते हुये ॥१॥ ललाट में ऊर्ध्व पुण्ड्र धारण करे ॥ २ ॥ कुक्षि में नाभी से लेकर १२ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा ॐ नारायणाय नमः इस नाम का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ३ ॥ हृदय में आठ अङ्गुल ऊँचा चार अङ्गुल चौड़ा ॐ माधवायनमः इस नाम का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करना चाहिये ॥ ४ ॥ कंठ में चार अंगुल ऊँचा तीन अंगुल चौड़ा ॐ गोविन्दायनमः इस नाम का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ५ ॥ पेट के दक्षिण भाग में १२ अंगुल ऊँचा ३ अंगुल चौड़ा ॐ विष्णवेनमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ६ ॥ दक्षिण भुजा के मूल में आठ अंगुल ऊँचा ३ अंगुल चौड़ा ॐ मधुसूदनाय नमः इस नाम का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ७ ॥ दक्षिण कंठ पार्श्व में ४ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा ॐ त्रिविक्रमायनमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ८ ॥ पेट के वाम भाग में १२ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा ॐ वामनायनमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥ ९ ॥ वाम बाहु मूल में ८ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा ॐ श्री धरायनमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥१०॥ वाम कंठपार्श्व में ४ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा ॐ हृषीकेशायनमः इस नाम का उच्चारण करते हुए पुंड्र धारण करे ॥११॥ ॐ पद्मनाभायनमः इस मंत्र से पीठ में तीन अङ्गुल चौड़ा ३ अङ्गुल ऊँचा पुंड्र धारण करे ॥१२॥ गले के पीछे भाग में ३ अङ्गुल ऊँचा ३ अङ्गुल चौड़ा दामोदरायनमः इस नाम से पुंड्र धारण करे और पुंड्र के पश्चात यदि तिलक बचे तो वासुदेव मंत्र से मस्तक पर धारण करे फिर श्रीचूर्ण को घोरकर उसके बीच में श्री बीज को लिखे। अनन्तर अङ्गुल्यग्रभाग अथवा सींक से लेकर मंत्रोच्चारण पूर्वक दीप शिखाकार पुंड्रों के क्रम से ॐ श्रियैनमः १ ॐ अमृतोद्भवायैनमः २ ॐ कमलायै नमः ३ ॐ चन्द्रशोभिन्यैनमः ४ ॐ विष्णुपत्न्यै नमः ५ ॐ वैष्णव्यै नमः ६ ॐ वरारोहायै नमः ७ ॐ हरि

वल्लभायै नमः ८ ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः ९ ॐ देवदेव्यै नमः १० ॐ महालक्ष्म्यै नमः ११ ॐ लोकसुंदर्यै नमः १२ इन मंत्रों से धारण करे। सर्वाभीष्ट फल प्रदायैनमः इस मंत्र से शेष श्री चूर्ण को मस्तक पर धारण करे यद्यपि महात्मा लोग पुंड्र के बनाने में आचमनी आदि का उपयोग नहीं करते तथापि सुन्दरता के कारण बहुत महात्मा लोग आचमनी का भी उपयोग करते ही हैं।

चतुश्चक्रं नमस्यामि केशवं कनक प्रभम्।
नारायणं घनश्यामं चतुश्शङ्खं नमाम्यहम् ॥१॥

(१) ललाट में चारों भुजाओं में चार चक्रों को धारण किये, हुए सुवर्ण के समान कान्ति वाले केशव भगवान् का ध्यान करे, (२) उदर के मध्य में, चारों भुजाओं में चार शङ्खों को धारण किये नील मेघ श्याम नारायण का ध्यान करे।

माधवं मणिभङ्गाभं चिन्तयामि चतुर्गदम्।
चन्द्रभासं चतुश्शार्ङ्गं गोविन्द महमाश्रये ॥२॥

(३) वक्षस्थल में, चारों भुजाओं में गदा को धारण किये हुए माणिक्य के समान वर्ण वाले माधव भगवान् का ध्यान करे, (४) कंठ के अग्र भाग में, चारों फुजाओं में धनुष को धारण किये हुए चन्द्र के समान वर्ण वाले गोविन्द भगवान् का ध्यान करे।

विष्णुं चतुर्हलंवन्दे पद्मकिञ्जल्क सन्निभम्।
चतुर्मुसलमब्जाभं संश्रये मधुसूदनम् ॥३॥

(५) उदर के दक्षिण पार्श्व में, चारों भुजाओं में हल को धारण किये हुए कमलकिञ्जल्क समान वर्णवाले विष्णु भगवान का ध्यान करे (६) दक्षिण वाहुमूल में चारों भुजाओं में मुसल को धारण किये हुए कमल समान वर्ण वाले मधुसूदन भगवान का ध्यान करे।

अग्निवर्णं चतुःखड्गं भावयामि त्रिविक्रमम्।
बामनं वालसूर्याभं चतुर्वज्रं विभावये ॥३॥

(७) दक्षिण कंठ पार्श्व में, चारों भुजाओं में खड्ग को धारण किये हुए अग्नि के समान वर्णवाले त्रिविक्रम भगवान का ध्यान करे (८)उदर के वाम पार्श्व में चारों भुजाओं में वज्र को धारण करने वाले वालसूर्यसमान कान्ति युक्त वामन भगवान का ध्यान करे।

श्रीधरं पुण्डरीकाभं चतुः पट्ट समाश्रये।
चतुर्मुद्‌गरमभ्येमि हृषीकेशं तडित्प्रभम् ॥५॥

(९)वामबाहु मूल में, चारों भुजाओं में पट्टस को धारण करने-वाले रक्तकमल समान वर्णवाले श्रीधर भगवान का ध्यान करे (१०) वाम कंठ पार्श्व में चारों भुजाओं में मुद्‌गर को धारण किये हुए बिजली की समान वर्णवाले हृषीकेश भगवान का ध्यान करे।

पञ्चायुधं पद्मनाभं प्रणमाम्यर्करोचिषम्।
दामोदरं चतुः पाशमिन्द्र गोपनिभंभजे ॥६॥
वासुदेवं मुपासेहं पूर्णेन्द्वयुत सन्निभम् ॥

(११) पृष्ठभाग में पंचायुधों को धारण किये हुए सूर्य के समान कान्तिवाले पद्मनाभ भगवान का ध्यान करे। (१२) गले के पृष्ठ भाग में चारों भुजाओं में पाश को धारण किये हुए इन्द्रगोप नामक जान-वर के समान वर्णवाले दामोदर नामक भगवान का ध्यान करे (१३) मस्तक पर शंख चक्र गदा पद्म धारी पूर्ण चन्द्र समान श्री वासुदेव भगवान का ध्यान करे। इस प्रकार अंजलि बाँधकर ललाटादि स्थानों में केशवादि भगवन्मूर्तियों का ध्यान करे।

अनन्तर "श्रियैनमः" इत्यादि पूर्वोक्त मंत्रों से चतुर्भुजा कमला-सनासीना वरदाभयमुद्रायुक्ता श्रीमहालक्ष्मी जी का ध्यान करना चाहिए। पश्चात् तत्तस्थानों में पूर्वोक्त भगवन् मूर्तियों और महालक्ष्मी जी का मानसिकाराधन करें, उनसे सन्निहित होने की प्रार्थना करे।

इति उद्‌र्ध्वपुड्र् धारण विधिः ॥

भगवदालयमुपेत्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य एभिःश्लोकैः साञ्जलि घंटानाद पुरस्सरं च परमात्मानं प्रबोधयेत् ।।

कौशल्या सुप्रजाराम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्त्तते ।
उत्तिष्ठ-नरशार्दूल कर्त्तव्यं दैवमाह्निकम् ।।१।।
स्वशेषभूतेन मया स्वीयैः सर्व परिच्छदैः ।
विधातुं प्रीतिमात्मनं देवः प्रक्रमते स्वयम् ।।२।।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ।।३।।

इति परमात्मानं सम्प्रार्थ्य घंटानादेनोद्बोध्य मङ्गलनीराजनं कुर्य्यादनन्तरमाग्नेयादिकोणक्रमेण जलपूर्णमर्घ्यादिपञ्चपात्रं न्यस्य तेष्वेतानि द्रव्याणि निक्षिपेत् ।

सिद्धार्थमक्षतं चैव कुशाग्रं तिलमेवच ।
यवं गन्धं फलं पुष्पं अर्घ्यद्रव्याणि निक्षिपेत् ।।१।।
पाद्येदूर्वा विष्णुपर्णीं श्यामाकं पद्ममेवच ।
एला लवङ्ग कङ्कोल जातिराचमनीयके ।।२।।
कोष्ठ माञ्जिष्ठ हारिद्र मुराशैलेय चम्पिकाः ।
वचा कचोर लामज्जा स्नानीये ह्यौषधीः क्षिपेत् ।।३।।

उक्त द्रव्याभावे तुलसीं निक्षिपेत, ततः ॐ विंविरजायै नमः इति मन्त्रेण विरजामावाह्य तज्जलं सर्वपात्र जले निक्षिपेत् । ततोऽधोल्लिखित मन्त्रेण आत्मनः परमात्मनोऽङ्गे करन्यासमङ्गन्यासञ्चकुर्य्यात् ।

ॐ पां नमः परमेष्ठ्यात्मने नमः शिरसि । ॐ वाँ नमः पराय पुरुषात्मने नमः नासाग्रे । ॐ राँ नमः पराय विश्वात्मने नमः हृदये । ॐ वाँ नमः पराय निवृत्तात्मने नमः गुह्यप्रदेशे । ॐ लाँ नमः पराय सर्वात्मने नमः सर्वाङ्गे ।

इति पञ्चोपनिषन्न्यासं कृत्वा श्रीमदष्टाक्षरन्न्यासं कुर्य्यात् ।।

ॐ ज्ञानाय हृदयाय नमः । ॐ नमः ऐश्वर्य्याय शिर से स्वाहा ।

ॐ नारायणाय शक्त्यै शिखायै वषट् । ॐ बलाय कवचाय हुँ । ॐ नमस्तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ नारायणाय वीर्य्याय अस्त्राय फट् ॥

ततोऽस्त्रमुद्रां प्रदर्श्य रक्षां कुर्य्यात् । तदनन्तरं भगवदर्पणीयं द्रव्यं निम्नाङ्कितमन्त्रेण शोधयेत् ।

"यं वायवे नमः वायुना शोषयामि" "रं वह्नये नमः वह्निना दाहयामि" "वं अमृताय नमः अमृतेन प्लावयामि" ।

निम्नाङ्कित मन्त्रेण तुलसीं समर्पयेत् ॥

कूर्म्मादीन् दिव्यलोकान् तदनुमणिमयं मण्डपं तत्र शेषं, तस्मिन्धर्मादिपीठं तदुपरि कमलं चामरग्राहिणीश्च । विष्णुं देवीं विभूषायुधमुरगगणं पादुके वैनतेयम्, सेनेशं द्वारपालान् कुमुदमुखगणान् विष्णुभक्तान् प्रपद्ये ॥१॥

अथाष्टाक्षरसम्पुटितगायत्र्या प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्, ततः निम्नाङ्कितमन्त्रैः भगवत्पूजनं कुर्य्यात् ॥

हरिःॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । ॐनमो नारायणायेत्यावाहयामि ॥ १॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद् भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति । ॐ नमो नारायणाय ॥ इत्यासनं परिकल्पयामि ॥२॥ त्रिपाद्दूर्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोव्विष्वङ् व्यक्क्रामत् शासनानशनेऽभि । ॐ नमो नारायणाय इत्यर्घ परिकल्पयामि॥३॥ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः ॥ पादोस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्या—मृतन्दिवि । ॐ नमो नारायणाय ॥ ४ ॥ इतिद्विवारं पाद्यं परिकल्पयामि ॥ ततो व्विराडजायत व्विराजो अधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथोपुरः । ॐ नमो नारायणाय ॥ इति त्रिवारं आचमनं परिकल्पयामि ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्व्या नारण्यान्ग्राम्याँश्चये । ॐ नमो नारायणाय ॥ इति स्नानं

परिकल्पयामि ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे॥ छन्दाᳬसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत । ॐ नमो नारायणाय इति वस्त्रं परिकल्पयामि ॥७॥ तस्मादश्वाऽअजायन्त येकेचोभयादतः ॥ गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जताऽजावयः ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ इति यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि ॥ ८ ॥ तंय्यज्ञं वर्हिंषि प्रौक्षन्नपुरुषञ्जातमग्रतः ॥ तेन देवाऽअयजन्त साद्ध्याऽऋषयश्चये । ॐ नमो नारायणाय॥ इति चन्दनं परिकल्पयामि ॥ ९ ॥ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्येते । ॐनमो नारायणाय ॥ इति पुष्पाणि परिकल्पयामि ॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः ॥ ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रोऽजायत । ॐ नमो नारायणाय ॥ इति धूपं परिकल्पयामि ॥११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्नि रजायत। ॐ नमोनारायणाय ॥ इति दीपं परिकल्यामि ॥१२॥ नाभ्या आसी दन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँन्रऽकल्पयन्। ॐ नमो नरायणाय ॥ इति नैवेद्यम्परिकल्पयामि ॥१३॥ त्वदीयं वस्तुगोबिन्द तुभ्यमेव समर्पितम् ॥ गृहाण सन्मुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर ॥ इति नैवेद्यम् ।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत ॥ व्वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः । नमो नारायणाय ॥ इति ताम्बूलं परिकल्पयामि ॥ १४ ॥

निम्नाङ्कित मन्त्रैः—अर्घ्यादिभिरुपचारैः देवीः अर्चयेत्तथा सुदर्शनादिकानपि एवम् ॥

ॐ श्रीं श्रियै नमः—ॐ भूँ भूम्यै नमः—ॐनीं नीलायै नमः

सप्तास्स्यासन्न्परिधयस् त्रिःसप्त समिधः कृताः ॥देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअवध्नन्न्पुरुषं पशुम् ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ इति

प्रदक्षिणां परिकल्पयामि॥१५॥यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ इतिपुष्पाञ्जलिं परिकल्पयामि ॥१६॥

अथ साञ्जलिरधोलिखितान् श्लोकान् पठेत् ॥

असत्यमशुचिं नीचमपराधैकभाजनम् ।
अल्प शक्तिमचैतन्यमनर्हं भृत्यकर्म्मणि ॥ १ ॥

दोषागारं दुरात्मानं मामेवं परिचिन्तयन् ।
मत्समर्पितमित्येतन्नत्वमर्हस्युपेक्षितुम् ॥ २ ॥

कौशल्या कल्पितंगेहे कानने लक्ष्मणार्पितम् ।
पम्पायां शवरीदत्तं भरद्वाजार्पितञ्चयत् ॥ ३ ॥

नवनीतं घृतं क्षीरं व्रजे यत्स्वयमर्जितम् ।
यद्दत्तं यज्ञपत्नीभिर्यन्महेन्द्रेण कल्पितम् ॥ ४ ॥

यदर्पितं कुचैलेन यद्यद्विदुर कल्पितम् ।
अन्यद्वा यद्यदिष्टं ते नित्यमुक्तैर्निवेदितम् ॥ ५ ॥

नाथार्ये यामुनाचार्ये यतीश्वर समर्पितम् ।
त्वन्महिम्नोऽनुरूपं यत्त्वत्प्रियाणां च यत्प्रियम् ॥६॥

यथा तथा स्वसङ्कल्पात्कल्पयित्वेदमेवहि ।
अतिप्रभूतमत्यन्तं भक्तिपूतं चतुर्विधम् ॥ ७ ॥

पथ्यं पाकविशेषाढ्यं रुच्यं दोषविवर्जितम् ।
दिव्यं दृष्टि प्रियं हृद्यं सरसं सौरभोत्तमम् ॥ ८ ॥

सर्वोपचारपूर्वं यत्सम्पाद्यं प्रेमपूर्वकम् ।
देव देव तदेतत्ते ददौ वरवरो मुनिः ॥ ९ ॥
अतस्त्वद्विषयप्रीतिः प्रेरितः करुणानिधे ।
अत्रैव सन्निधायत्वमखिलैस्सह भोक्तृभिः ॥१०॥

अनन्यहृदये सम्यगासीनः परमासने।
श्रीमन्नारायणस्वामिन्नेतत्स्वीकर्त्तुमर्हसि ॥११॥

अथ यथा शक्त्यष्टाक्षरंजप्त्वा ततः भगवत्प्रसादं लक्ष्म्यनन्तस्वाचार्येभ्यः समर्प्य भगवतः कर्पूरनीराञ्जनं कुर्य्यात् ततोऽधःस्थमन्त्रैः पुष्पाञ्जलिं कुर्य्यात् ॥

हरिः ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीवचक्षुरात तं तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदं पर्य्याप्ताऽअनन्तरापाय सर्वस्तोमोति रात्र्यं उत्तमं अहर्भवन्ति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेव तेनाप्नोति सर्वं जयति हरिःॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ १ ॥ सुगन्धवल्ली शतपत्र जाती सुवर्ण चम्पा वकुलोद्भवानि ॥ गृहाण देवेश मयार्पितानि प्रभो हरे श्रीतुलसीदलानि ॥ २ ॥ हरिः ॐ अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजं होतारं रत्न धातमम् ॥ ३ ॥ हरिःॐ इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थोपायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयत् श्रेष्ठतमाय कर्म्मणे ॥ ४ ॥ हरिःॐअग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता तत्सिवर्हिषि ॥ ५ ॥ हरिःॐ शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयो अभिश्रवन्तु नः ॥ ६ ॥ ॐ मित्यग्रे व्याहरेत् नम इति पश्चान्नारायणायेत्युपरिष्टात् ॥ ७ ॥ ॐ मित्येकाक्षरं नम इति द्वे अक्षरे नारायणायेति पञ्चाक्षराणि एतद्वै नारायणास्याष्टाक्षरं पदं योहवै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति अनुपप्लवः सर्वमायुरेति विन्दतेप्राजापत्यं रायस्तोषं गोपत्यं ततोऽमृतत्व मश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति एवं वेदा इत्युपनिषद् ॥८॥ अथातःसमयाचारिकान्धर्म्मान् व्याख्यास्यामः । धर्म्मज्ञ समयः प्रमाणं वेदाश्चत्वारो वर्णा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रास्तेषां पूर्वः पूर्वोजन्मतः श्रेयान् । अथ कर्म्मण्याचाराद्यानि गृह्यन्ते उदकेनैव पूर्वपक्षाःपुण्याहेषु कार्य्याणि यज्ञोपवीतिना प्रदक्षिणम् ।

नमस्तस्मै वराहाय लीलयोद्धरते महीम्।
खुर मध्यगतोयस्य मेरुः खड़ खड़ायते ॥१॥

इच्छामोहिमहा वाहुंरघुवीरं महाबलम् ।
गजेन महता यान्तं रामंछत्रावृताननम् ॥२॥

तंदृष्ट्वा शत्रु हन्तारं महर्षीणां सुखावहम् ।
वभूवहृष्टा वैदेही भर्त्तारं परिषस्वजे ॥३॥

एष नारायणः श्रीमान् वैकुण्ठ कृतकेतनः ।
नागपर्य्यंङ्कमुत्सृज्य-ह्यागतो मथुरांपुरीम् ॥४॥

तमद्भुतं वालकमम्वुजेक्षणां चतुर्भुजं शङ्खगदार्युदायुधम् ।
श्रीवत्सलक्ष्मङ्गल शोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सान्द्रापयोदसौभगम् ॥५॥

महाह वैडूर्य्यं किरीट कुण्डलत्विषा परिष्वक्त सहस्र कुन्तलम् ।
उद्दाम काञ्च्यङ्गद कङ्कणादि भिर्विरोचमानं वसुदेवऐक्षत ॥६॥

तासामाविरभूच्छौरिस् स्मयमान मुखाम्वुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वीसाक्षान्मन्मथ मन्मथः ॥७॥

अहोवीर्यं महोशौर्यं महा बाहु पराक्रमम् ।
नारसिंहं परं देव महो वल महो वलम् ॥८॥

वैकुण्ठे तु परे लोकेश्रिया सार्द्धं जगत्पतिः ।
आस्ते विष्णुरचिन्त्यात्मा भक्तैर्भागवतैःसह ॥९॥

मायावीपरमानन्द स्त्यक्त्वा वैकुण्ठ मुत्तमम् ।
स्वामिपुष्करिणी तीरे रमयासहमोदते ॥१०॥

मुक्तिदश्च मुमुक्षूणां सर्वेषां सर्वकामदः ।
क्रीड़ार्थं लोक रक्षार्थं वसाम्यत्र श्रिया सह ॥११॥

वेंकटाद्रिसमं स्थानं व्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन ।
वेंकटेशसमोदेवोनभूतो न भविष्यति ॥१२॥

वपा परि मलोल्लास वासिताधर पल्लवम् ।
मुखं वरद राजस्य मुग्धस्मेर-मुपास्महे ॥१३॥

फाल्गुने मासिपूर्णायामुत्तरे ऽ र्क्षेन्दुवासरे ।
गोविन्द राजो भगवान् प्रादुरा सीन्महा मुनिः ॥१४॥

कस्तूरीकलितोद्ध्र्व पुण्ड्र तिलकं कर्णान्त लो ले त्तणं ।
मुग्धस्मेरमनोहरा धर दलं मुक्ता किरीटोज्वलम् ॥

पश्यन् मानस पश्यतोहर तरं पर्य्यायपंकेरुहं ।
श्रीरङ्गाधिपतेः कदानु वदनं सेवेय भूय्योप्यहम् ॥१५॥

कदापुनः शङ्ख रथाङ्ग कल्पक ध्वजारविन्दांकुश वज्रलाञ्च्छनम् । त्रिविक्रम त्वच्चरणाम्बुजद्वयं मदीय मूर्द्धानमलंकरिष्यति ॥१६॥ अखिल भुवन जन्मस्थेम भङ्गादिलीले विनत विविध भूतव्रात रत्तैक दीत्ते । श्रुति शिरसिविदीप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे भवतु मम परस्मिन् शेमुषी भक्ति रूपा ॥१७॥ पाराशर्य्य वचः सुधामुपनिषत् दुग्धाब्धि मध्योद्धृतां संसाराग्नि विदीपन व्यप गत प्राणात्म संजीवनीम् । पूर्वाचार्य्य सुरत्तितां बहुमति व्याघात दूरिस्थितामानीतांतु निजा- त्तरैः सुमनसो भौमाः पिवन्त्वन्वहम् ॥१८॥ (अत्रद्वयं) पितरं मातरं दारान् पुत्रान् वन्धून् सखीन् गुरून् । रत्नानि धन धान्यानि त्तेत्राणिच- गृहाणिच ॥१६॥ सर्व धर्मांश्च सन्त्यज्य सर्व कामांश्च सात्तारान् । लोकविक्रान्त चरणौ शरणं ते व्रजं विभो ॥२०॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥२१॥ पितासि लोकस्यचराच- रस्य त्वमस्यपूज्यश्च गुरुर्गरीयान्। नत्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकःकुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिम प्रभावः ॥२२॥ तस्मात्प्रणम्य प्रणिधायकायं प्रसादयेत्वामहमीशमीड्यम् । पितेवपुत्रस्यसखेव सख्युः प्रियः प्रियाया र्हसि-देव सोढुम् ॥२३॥ मनोवाक्कायैरनादि काल प्रवृत्ताऽनन्तकृत्य करण कृत्याकरण भगवदपचारभागवतापचाराऽ सह्यापचार रूप नानाविधानन्तापचारानारब्ध काय्र्यानारब्ध काय्र्यान् कृतान्क्रियमाणान् करिष्यमाणाँश्च सर्वानशेषतः त्तमस्व अनादि

काल प्रवृत्तं विपरीत ज्ञान मात्मविषयं कृत्स्न जगद्विषयञ्च विपरीतं वृत्तञ्चाऽशेषविषयमद्यापि वर्त्तमानं वर्तिष्यमाणञ्च सर्वं क्षमस्व॥२४॥मदीयानादि काल प्रवाह प्रवृत्तां भगवत्स्वरूपतिरोधा न करीं विपरीतज्ञान जननीं स्वविषयायाश्च भोग्यता बुद्धे र्जननीं देहेन्द्रियत्वेन सूक्ष्म रूपेण चावस्थितां दैवीं गुणमयीं मायां दासभू तं शरणागतोऽस्मि तवास्मिदास इति वक्तारं मांतारय ॥२५॥ विज्ञापनंयदिद मद्यतु मामकीनमङ्गी कुरुष्व यतिराज दयाम्बुराशे॥ अज्ञोऽयमात्मगुणलेश विवर्जितश्च तस्मादनन्य शरणो भवतीतिमत्वा ॥२६॥ जयति सकल विद्यावाहिनी जन्म शैलो जनि पथ परिवृत्ति श्रान्त विश्रान्त शाखी। निखिल कुमति माया शर्वरी वाल सूर्य्यो निगम जलधिवेला पूर्ण चन्द्रो यतीन्द्रः ॥२७॥ सुशंख चक्र लाच्छनं सद्धूर्ध्वपुण्ड्र मण्डितं सुकण्ठ लग्न सत्तुलस्यनर्घ्ये पद्म मालिका। सितान्तरीय सोत्ततरीय यज्ञ सूत्र शोभिते ममाविरस्तु मान से गुरुस्तु वेङ्कटेस्वरः ॥२८॥ नमज्जनस्य चित्तभित्ति भक्ति चित्र तूलिका भवाहि भीर भञ्जने नरेन्द्र मन्त्र तन्त्रिणा। प्रपन्न लोक कैरव प्रसन्न चारु चन्द्रिका शठारि हस्त मुद्रिका हठाद्धिनोतु मे तमः ॥२९॥ ॐभरताय परं नमस्तस्मै प्रथमोदाहरणाय भक्ति भाजां यदुपज्ञमशेषतः: पृथिव्यां प्रथितो राघव पादुका प्रभावः ॥३०॥ श्री नगर्य्यां महापुर्य्यां ताम्रपर्ण्युत्तरे तटे श्री तिन्तृणी मूलधाम्नी शठकोपाय मङ्गलम् ॥३१॥

एभिर्मन्त्रैः श्री तुलसीदलानि समर्पयेत्।

हरिः ॐ केशवायनमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः विस्तरेण चेत् एभिर्मन्त्रैः श्रीतुलसीदलसमर्पणङ्कुर्य्यात्॥

ॐ कृष्णाय नमः ॥१॥ ॐ कमलानाथाय नमः ॥२॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥३॥ ॐ सनातनाय नमः ॥४॥ ॐ वसुदेवात्मजाय नमः ॥५॥ ॐ पुण्याय नमः ॥६॥ ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः ॥७॥ ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः ॥८॥ ॐ यशोदावत्सलाय नमः ॥९॥ ॐ हरये नमः ॥१०॥ ॐ चतुर्भुजात्त शङ्खारिगदा खड्गाद्युदायुधाय नमः ॥११॥ ॐ देवकीनन्दनाय नमः ॥१२॥ ॐ श्रीशाय नमः ॥१३॥ ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः ॥१४॥ ॐ यमुना वेगसंहारिणे नमः ॥१५॥ ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः ॥१६॥ ॐ पूतनाजीवित हराय नमः ॥१७॥ ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः ॥१८॥ ॐ नन्दव्रजजनानन्दने नमः ॥१९॥ ॐ सच्चिदानन्द विग्रहाय नमः ॥२०॥ ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः ॥२१॥ ॐ नवनीत नटाय नमः ॥२२॥ ॐ अनघाय नमः ॥२३॥ ॐ नवनीत नवाहाराय ममः ॥२४॥ ॐ मुचकुन्दप्रसादकाय नमः ॥२५॥ ॐ षोडशस्त्रीसहस्त्रेशाय नमः ॥२६॥ ॐ त्रिभङ्गललिताऽकृतये नमः ॥२७॥ ॐ सुकवागमृताब्धीन्दवे नमः ॥२८॥ ॐ गोविन्दाय नमः २९॥ ॐ योगिनाम्पतये नमः ॥३०॥ ॐ वत्सवाटचराय नमः ॥३१॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥३२॥ धेनकासुरभञ्जनाय नमः ॥३३॥ ॐ तृणीकृत तृणावर्त्ताय नमः ॥३४॥ ॐ यमलार्जुन भञ्जनाय नमः ॥३५॥ ॐ उत्ताल ताल भेत्रे नमः ॥३६॥ ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः ॥३७॥ ॐ गोप गोपीश्वराय नमः ॥३८॥ ॐ योगिने नमः ॥३९॥ ॐ कोटिसूर्य्यसमप्रभाय नमः ॥४०॥ ॐ इलापतये नमः ॥४१॥ ॐ परञ्ज्योतिषे नमः ॥४२॥ ॐ यादवेन्द्राय नमः ॥४३॥ ॐ यदूद्वहाय नमः ॥४४॥ ॐ बनमालि ने नमः ॥४५॥ ॐ पीतवाससे नमः ॥४६॥ ॐ पारिजाताऽ पहारकाय नमः ॥४७॥ ॐ गोबर्द्धनाचलोद्धर्त्रे नमः ॥४८॥ ॐ गोपालाय नमः ॥४९॥ ॐ सर्वपालकाय नमः ॥५०॥ ॐ अजाय नमः ॥५१॥ ॐ निरञ्जनाय नमः ५२ ॐ कामजनकाय नमः ५३ ॐ कञ्जलोचनाय नमः ५४ ॐ मधुघ्नाय नमः ५५ ॐ मथुरानाथाय नमः ५६ ॐ द्वारिकानाथाय

नमः ५७ ॐ वलिने नमः ५८ ॐ वृन्दावनान्त स्सञ्चारिणे नमः २६ ॐतुलसीदामभूषणाय नमः ६० ॐ स्यमन्तकमणिहर्त्रे नमः ६१ ॐ नरनारायणात्मकाय नमः ६२ ॐ कुब्जाकृष्टाम्बरधराय नमः ६२ ॐ मायिने नमः ६४ ॐ परमपुरुषाय नमः ६५ ॐ मुष्टिकाऽसुरचाणूर-मल्लयुद्ध विशारदाय नमः ६६ ॐ संसार वैरिणे नमः ६७ ॐ कंसारये नमः ६८ ॐ मुरारये नमः ६६ ॐ नरकान्तकाय नमः ७० ॐ अनादि ब्रह्मचारिणे नमः ७१ ॐ कृष्णाव्यसन कर्षकाय नमः ७२ ॐ शिशु-पालशिरश्छेत्रे नमः ७३ ॐ दुर्योधन कुलान्तकाय नमः ७४ ॐ विदुराऽक्रूरवरदाय नमः ७५ ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः ७६ ॐ सत्यवाचे नमः ७७ ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः ७८ ॐ सत्यभामारताय नमः ७६ ॐ जयिने नमः ८० ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः ८१ ॐ विष्णवे नमः ८२ ॐ भीष्म मुक्तिप्रदाय नमः ८३ ॐ जगद्गुरवे नमः ८४ ॐ जगन्नाथाय नमः ८५ ॐ वेणुनादविशारदाय नमः ८६ ॐवृषभासुरविध्वंसिने नमः ८७ ॐ वाणासुरकरान्तकाय नमः ८८ ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः ८६ ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः ६० ॐ पार्थसारथये नमः ६१ ॐ अव्यक्ताय नमः ६२ ॐ गीताऽमृत महोदधये नमः ६३ ॐ कालीयफणमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजाय नमः ६४ ॐ दामोदराय नमः ६५ ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः ६६ ॐ दानवेन्द्रविनाश-काय नमः ६७ ॐ नारायणाय नमः ६८ ॐ परब्रह्मणे नमः ६६ ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः १०० ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपीवस्त्राऽपहा-रकाय नमः १०१ ॐ पुण्यश्लोकाय नमः १०२ ॐ तीर्थपादाय नमः १०३ ॐ वेदवेद्याय नमः १०४ ॐ दयानिधये नमः १०५ ॐ सर्वती-र्थात्मकाय नमः १०६ ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः १०७ ॐ परात्पराय नमः १०८ ॐ श्रीरुक्मिणी सत्यभामासमेत श्री गोपालस्वामिने नमः ॥११६॥ ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥११०॥

नमः श्रियै लोकधात्र्यै ब्रह्ममात्रे नमो नमः ॥ नमस्ते पद्मनेत्रायै

पद्ममुख्यै नमो नमः ॥१॥ प्रसन्न मुख पद्मायै पद्मकान्त्यै नमो नमः ॥ नमो विल्ववनस्थायै विष्णु पत्न्यै नमो नमः ॥२॥ विचित्रक्षौमधारिण्यै पृथुश्रोण्यै नमो नमः ॥ पक्वविल्वफलापीन तुङ्गस्तन्यै नमो नमः ॥३॥ सरक्तपद्म पत्राभकरपादतले शुभे ॥ संरक्ताङ्गद केयूर काञ्चीनूपुरशोभिते ॥४॥ यक्षकर्दम संलिप्त सर्वाङ्गे कनकोज्वले ॥ माङ्गल्याऽभरणैश्चित्रैर्मुक्ताहारैर्विभूषिते ॥५॥ ताटङ्कै रवतंसैश्च शोभमानमुखाम्बुजे ॥ पद्म हस्ते नमस्तुभ्यं प्रसीद हरिवल्लभे ;।६॥ ऋग्यजुस्साम रूपायै विद्यायै ते नमो नमः ॥ प्रसीदास्मान्कृपा दृष्टि-पातैरालोकयाब्धिजे ॥७॥ नृत्य वाद्यादि गीतादि पुराणपठनादिभिः ॥ राजो पचारैस्सकलैस्सन्तुष्टो भव राघव

इतिपुष्पाञ्जलिः अथनीरांजनम् ॥

श्रियः कान्ताय देवाय कल्याण निधयेऽर्थिनाम् ॥ श्री वैकुण्ठनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥२॥ लक्ष्मीशविभ्रामालोल सभ्रू विभ्रमचक्षुषे ॥ चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥३॥

श्री वैकुण्ठ विरक्ताय स्वामि पुष्करिणी तटे ॥
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥४॥

सुस्मिताय सुनासाय सुदृशे सुन्दरभ्रुवे ॥
सुललाट किरीटाय रङ्गराजाय मङ्गलम् ॥५॥

कमला कुच कस्तूरी कर्दमाङ्कित वक्षसे ॥
यादवाद्रिनिवासाय सम्पत्पुत्राय मङ्गलम् ॥६॥

मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणात्मने ॥
चक्रवर्त्ति तनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥७॥

श्री मद्गोपालवालाय गोदाऽभीष्टप्रदायिने ॥
श्री सत्या सहितायास्तु कृष्णदेवाय मङ्गलम् ॥८॥

नीलाचलनिवासाय नित्याय परमात्मने ॥
सुभद्राप्राणनाथाय जगन्नाथाय मङ्गलम् ॥९॥

मङ्गलाशासन परैः मदाचार्य पुरोगमैः ॥
सर्वैश्च पूर्वैराचार्य्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥१०॥

इति नीराजनम्

अथ श्री लक्ष्मणारामसिंहासनाधीश्वराणाम् गुरुपरंपरा

सर्वदेश दिशा कालेष्वव्याहत पराक्रमा ॥
रामानुजार्य्य दिव्याज्ञा वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥१॥

रामानुजार्य्यदिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्वला ॥
दिगन्तव्यापिनी भूयात् साहिलोकहितैषिणी ॥२॥

श्रीमन्श्रीरङ्गश्रियमनुपद्रवामनुदिनं समवर्धय
श्रीमन्श्रीरङ्गश्रियमनुपद्रवामनुदिनं समवर्द्धय ॥३॥

नमः श्रीशैलनाथाय कुन्तीनगर जन्मने ॥
प्रसादलब्धपरमप्राप्य कैङ्कर्य्य शालिने ॥४॥

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादिगुणार्णवम् ॥
यतीन्द्रप्रवणं बन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ॥५॥

लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम् ॥
अस्मदाचार्य्य पर्य्यन्तां बन्दे गुरुपरम्पराम् ॥६॥

योनित्यमच्युत पदाम्बुज युग्म रुक्म व्यामोहितस्तदितराणि तृणाय मेने ॥ अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्यदयैकसिन्धो रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥७॥ माता पिता युवत यस्तनया विभूतिः सर्वं यदेव नियमेनमदन्वयानाम् ॥ आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामं श्रीमत्तदंघ्रि युगुलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥८॥ भूतं शरश्च महदाह्वय भट्टनाथ श्रीभक्ति-

सारकुलशेखर योगिवाहान् ।। भक्ताङ्घ्रि रेणु परकाल यतीन्द्र मिश्रान् श्री मत्पराङ्कुश मुनि प्रणतोऽस्मिनित्यम् ।।९।। गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान नरपति परिक्लिप्तं शुल्कमादातुकामः ।। श्वसुरमम-रवन्द्यं रङ्गनाथस्य साक्षात् द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि ।।१०।।अस्मद्देशिक मस्मदीय परमाचार्य्यानशेषान् गुरून् श्रीमलक्ष्मण योगि पुङ्गव महा पूर्णौ मुनिं यामुनम् ।। रामं पद्म विलोचनं मुनिवरं नाथं शठ द्वेषिणं सेनेशं श्रियमिन्दिरा सहचरं नारायणं संश्रये ।।११।। भारद्वाज कुलारविन्द तरणिं सौशील्य वारांनिधिं श्री मच्छ्रीश पदार विन्द युगले सुप्रेम सीमावधिम् ।। श्रीमद्वीरजनार्दनार्य चरणेष्वत्यन्त सक्तंसदाश्रीमच्छ्री बदरी प्रपन्न सुगुरुं वन्दे दयैकार्णवम्।।१२।। नारा-यणस्य वरकिङ्कर भाव युष्टं लक्ष्मी प्रपन्नकरुणार्द्र कटाक्ष लक्ष्यम् ।। श्री मन्मुकुन्द पदपङ्कज चञ्चरीकं श्रीमज्जनार्दनगुरुं सततं भजामि।।१३।। श्री मन्मुकुन्द पद पङ्कज भृङ्गराजं वेदान्त वेद्य पुरुषेऽर्पित स्वात्म भावम् ।। दीनात्मनां करुणयार्त्ति हरं दयालुं लक्ष्मी प्रपन्न मुनिवर्य्य महं प्रपद्ये ।।१४।। श्री राजगोपाल पदाब्ज भृङ्ग—मवाप्त शास्त्रार्थं विशेषतत्वम् ।। कात्यायनार्य्यान्वयपूर्ण चन्द्रं श्री मन्मुकुन्दार्य्यमहं भजामि ।।१५।। नीलाद्रिनाथ कैङ्कर्य्ये दत्तप्रवण मानसम् ।। तत्सूनु तत्कृपापात्रं श्रीनिवास गुरुं भजे ।।१६।। वेदान्तदेशिक कटाक्ष विवृद्ध बोधं कान्तोप यन्त्रि यमिनः करुणैकपात्रम् ।। वत्सान्ववाय-मनवद्य गुणैरुपेतं भक्त्या भजामि परवादि भयङ्करार्य्यम् ।।१७।। अमर्य्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूया प्रसवभूः कृतघ्नोदुर्मानिस्स्मरपरवशो वञ्चन परः नृशंसः पापिष्ठः कथ महमितो दुःख जलधेर पारादुत्तीर्ण स्तवपरिचरेयं चरणयोः ।।१८।। मंगलं गुरुवर्याय मंगलंगुण सिन्धवे वादिभीति करार्य्याय नित्य श्रीनित्यमंगलम् ।। गोदाव्रतोत्सवेऽनेननीराञ्जनंकुर्य्यात नीलातुङ्गस्तनगिरितटी सुप्तमुद्बोध्यकृष्णं पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरस्सिद्ध मध्यापयन्ती ।। स्वोच्छिष्टायांस्रजि नि गलितंयावलात्कृत्यभुङ्क्ते गोदा तस्यै नमइदमिदंभूय एवास्तु भूयः ।।

अथ कर्पूरनीराञ्जनं विधाय, एभिर्मन्त्रैर्भगवन्तं शाययेत।

ॐ जय जय नृसिंह नारायणानन्ततुभ्यम्। नमोभुजगेन्द्रशायिने सुखं योगनिद्रास्तुते ॥१॥ पर्य्यङ्काशन मारुह्य रमया सह हे प्रभो। निद्रां कुरुष्व भगवन् सुदर्शन सुरक्षितः ॥२॥ क्षीरसागर तरङ्ग शीकरा सार तारकित चारुमूर्त्तये। भोगि भोग शयनीय शायिये माधवाय मधु विद्विषे नमः ॥३॥ अथउत्सवादिषु' एभिर्मन्त्रैः पञ्चामृतस्नानम्॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुवस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्मसि वरुणस्य ऋतसदन्मसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत् ॥१॥ इति वरुणस्नानम् ॥ ॐपयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यंतरिक्षे पयोधाः पयस्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ इति पयसास्नानम् ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः सुरभिनो मुखा करत्प्राणऽआयूंषितारिषत् ॥३॥इति दध्नास्नानम् ॥ॐ घृतं घृत पावनः पित्रतवसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिश आदिशो व्विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः ॥४॥ इति घृतेनस्नानम् ॥ ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नःसन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधुःद्यौरस्तुनः पिता। मधु मान्नो वनस्पतिर्मधुमानस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥५॥ इति मधुनास्नानम् ॥ ॐ अपांरसमुद्वसं सूर्य्ये सन्तं समाहितं अपां रस-स्य यो रसस्तवोगृह्णाभ्युत्तम 'मुपयाय गृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टं गृणा-म्येषते योनिरीन्द्रयत्वजुष्टतमम् ॥६॥ इति शर्करास्नानम् ॥ ॐ सप्तते अग्ने सप्तसमिधः सप्त जिह्वा सप्त ऋषयः सप्तधाम प्रियाणि सप्त होताः सप्त धात्वां यजन्ति सप्त योनीरामृणस्त्र घृतेन स्वाहा। इति सप्त जल स्नानम् ॥७॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमभियन्ति सप्त श्रोतसः सर-स्वतीतु पञ्चधासोदेशो भवत्सरित्। इति शुद्धोदकस्नानम्। इति पञ्चा-मृत स्नानम् ॥

इति श्री भगवत्पूजन प्रकारः

❀ श्रीमते रामानुजाय नमः ❀

श्री रीवाँ राज गुरुस्वामी श्री १०८ श्री बद्री
प्रपन्नाचार्य विरचितम्

श्री लक्ष्मण महिम्नः स्तोत्रम्

॥ अनेन महिम हेतु वर्णनम् ॥

महित्वं विज्ञात्येपदपि जनता यस्य विदितं
मुनिः सीमानन्दं बिहरति सदा निर्भय पदे ॥
अगम्यं वेदान्तैरधिगतमलं सेवकधियो ।
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपणशरणं लक्ष्मणगुरुम् ॥१॥

॥ अनेनानन्त शब्दार्थमाह ॥

श्रियो भर्त्तुस्तल्पं क्षितिभरणकल्पं फणिवरं ।
स्वनिर्वाच्वश्रीशाङ्कुतरुचिकथानामभजनैः ॥
उदीर्णासीमानं दृढनयनसंज्ञास्यरसनैः ।
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपणशरणं लक्ष्मणगुरुम् ॥२॥

॥ श्रीभगवदाज्ञया सृष्ट्युपकरणत्व मप्यस्यैव सूच्यतेऽनेन ॥

अचित्साम्यान् हृद्यान् करणविकलाँ श्चेतनमणीन् ।
दयाक्लिन्नोदृष्ट्वा व्यरमयत निद्रां भगवतः ॥
रमोद्यानं प्रोल्लासयति शुभलोकत्रयंतरुम् ।
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपणशरणं लक्ष्मणगुरुम् ॥३॥

॥ अनेन भगवदाज्ञया संहार कर्त्तृत्व मप्यस्यैव सूच्यते ॥

विभोरिच्छां बुद्ध्वा निजहृदयशय्योत्सुकधिया ।
विराजं संहर्तुं स्थिरचरविचित्राकृति गिरम् ॥

मुखात्कोटीन्रुद्रान्नजनयत विद्याविलसितान् ।
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपणशरणं लक्ष्मणगुरुम् ॥४॥

॥ अनेन त्रिलोक्यां भगवदुपासनामहोपदेश कत्वमाह ॥

असङ्ख्ये ब्रह्माण्डे प्रचुरजनभाण्डेऽनुपवनं ।
प्रजातै र्जीवौघै र्विविधतमवाग्रूपजनिभिः ॥

सहस्रास्योत्पन्नाद्यजति नवनाम्नो मधुरिपुं ।
प्रपद्ये श्रीमन्तंकृपण शरणं लक्ष्मण गुरुम् ॥५॥

॥ अनेन सर्व शब्द प्रणेतृत्वमाह ॥

ऋषे र्गोनर्देऽर्घाञ्जलिकमलजःसान्ध्य समये––
विवाद प्रत्यस्तां दुरवगमनां पाणिनि गवीम् ॥
सुनिर्णीय व्याख्यापयदमित विद्वत्समितिसु––
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपण शरणं लक्ष्मण गुरुम् ॥६॥

॥ अनेनायुर्वेद प्रवर्त्तकत्वमप्यस्यै वेति सूच्यते ॥

शिरोरत्नव्रातामृतकिरणसिक्तौषधिगणै -
र्वृहत्पापव्याधिग्लपित वपुषां लब्धजनुषाम् ॥
रुजं दूरीकर्तुं चरकमवद—द्वैद्यकविधिं
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपण शरणं लक्ष्मणगुरुम् ॥७॥

॥ अनेन योग शास्त्रकर्तृत्वमाह ॥

जरामृत्यूद्विग्नां पुनरपि समुद्वीक्ष्य जगतीं
कृपाम्भोधिर्योगं व्यरचयत पातञ्जलमयम् ॥
लभन्ते येनेष्टं क्रतुशत दुरापं जनपदाः ।
प्रपद्ये श्रीमन्तं कृपणशरणं लक्ष्मण गुरुम् ॥८॥

॥ अस्मिन्श्लोकेऽवतारद्वय चरित्र दिग्दर्शन माह ॥

कनीयान् ज्येष्ठः सन् रघु यदु गृहे वान्धवहितं—
रणेऽरण्ये राज्ये तदभिमतकैङ्कर्य्यरसिकः ॥
मनुष्यानुष्ठेयं प्रतियुगमहो ग्राहयति यः—
प्रपद्ये श्री० ॥९॥

॥ इतः परं षड्भिश्श्लोकै रामायण रत्नाकरोपलब्ध चरित्र रत्नमाह ॥

कृतोद्वाहो गच्छन् निमिनगरतः कोशलपुरीं
नृपोत्कर्षामर्षा न्तरित तपसं भार्गवमणिम् ।
प्रभावोत्साहाप्तैः प्रणतमकरो च्छौर्य वचनैः
प्रपद्ये श्री० ॥१०॥

॥ अनेन लक्ष्मीविशिष्टोपासनयैव भगवद्भागवता चार्य्या राधनमाह ॥

सवन्धुर्गोपीष्टो व्रजभुविलसन्, शङ्कशिरसं
स्त्रियः कर्णं नासां निरभिदद लं रावणमुखम् ॥
त्रिधार्च्यं ब्रह्म श्रीयुत (स्तुत) मितिच लक्ष्मीर्हरि नुता(युता)
प्रपद्ये श्री० ॥११॥

॥ आभ्यां संक्षेपतोऽरण्य किस्किन्धोक्त चरित्रमाह ॥

गिरौदर्य्यां कुञ्जे विमल मुनि पुञ्जं सुरमयन्
दवाग्निं वैदेह्या विरहमरि वंशेषु विसृजन् ॥
सखित्वं सार्वात्म्यं प्रभुमनुचरन् प्राजयत यः
प्रपद्ये श्री० ॥१२॥

॥ अनेन सर्वापत्सु स्वेष्टदेव भगवत्स्मरणाधीनमेव कार्य्यमत्र साधनमाह ॥

सुहृत्तः सुग्रीवोऽम्बुधिरपि ततो राद्ध विभवौ
चतुर्मासातीतेऽपि नकिमुचितं तौ विविदतुः ॥

तदायुक्त्या दान्तौ शरणमनयद्योऽग्रजपदं
प्रपद्ये श्री० ॥१३॥

॥ अनेन सेव्य सेवकयोरिच्छाधीन स्वप्रबन्ध घट कत्वमाह ॥

शराभ्द्रातुर्वीर्यैस्मरणनिशिता द्रावणिमघं
जितेन्द्रं ब्रह्मास्त्रोऽजितमपि दशास्याऽनुजकृते ॥
प्रमथ्नन्तं सेनां रवितनुज नाथां समवधीत्
प्रपद्ये श्री० ॥१४॥

सदा साधुत्राण प्रसित मतिना दाशरथिना-
विनिक्षिप्तां गुर्वीं सकल जनता पालनधुराम् ॥
प्रजानां वा राज्ञो रुचिमभिलषन् सन्निरवहत्
प्रपद्यें श्री० ॥१५॥

॥ इतः परं पञ्चभिश्श्लोकैर्वलभद्र रूपेणावतीर्णस्य श्री लक्ष्मणस्य श्रीमद्भागवतान्तर्हितं यशोवर्णयति ॥

वयस्यानां लीला सहन दहन व्याकुल हृदः
प्रलम्बादीन् हत्वा द्विविदखर दुर्मुष्टिक शलान्
सुहृत्क्रीडादानाद्धृत-ललितरामाह्वयगुणम्-
प्रपद्ये श्री० ॥१६॥

॥ ब्रह्मणः सहानुभूत्या दानपात्रस्य निःसीमातिशयं महद्गौरवं सूच्यते ॥

विचिन्वन्तीं श्रेष्ठं दयित मवशिष्टं प्रलयतः
ककुद्मी स्वां पुत्रीं शुचिजलज जन्मानुमतितः ॥
समर्प्यैवं यस्मै स्वयमपि चिरायुश्चमजयत्
प्रपद्ये श्री० ॥१७॥

॥ संकर्षणशब्दार्थमाह ॥

हितोक्तिं नाशृण्वन् पुरु नृपतयो गर्वमतयो
विधित्सन्नन्वर्थं बुध सदसि संकर्षणपदम् ॥
कुरूणां वृष्णीनां प्रणयमकरोद्धास्तिन पुरे-
प्रपद्ये श्री० ॥१८॥

॥ जनानां सन्धिकार्य्येणैव सर्वकर्मसामर्थ्यम् ॥

यदाऽधर्मे मूढा न सुखमबुधन् भारत भटाः
सुमर्त्तुं सन्नद्धाः कुटिल कलि दुर्य्योधन वशात् ॥
प्रियद्रोहाद्भीरुः सहज करुण स्तीर्थमचरत्
प्रपद्ये श्री० ॥१९॥

॥ लोभ एवानर्थमूल माह ॥

धनात्प्रायोऽनर्थो भवति विदुषा मित्युपदिशन्-
उदासीनोऽप्यासीज्जनक मनुशत्राजित मणेः ॥
गदायुद्धं स्वाध्यापयत धृतराष्ट्रात्मजमिह-
प्रपद्ये श्री० ॥२०॥

॥ इतः परं श्री सिद्धान्तं दृढयति ॥

दुराशाहिग्रहस्ता सुर नृपशु दुर्वाद जनितं ।
व हिस्कार्य्यैं र्वेदात् पतित कुमनीषैरुपचितम् ॥
सरस्वत्या हार्दं ज्वरमशमयत् सूक्ति सुधया ।
प्रपद्ये श्री० ॥२१॥

॥ भगवच्छरणागतिरेव मुख्य साधन मनेनाह ॥

उपायान्कर्म्मादीन् धृत पवनचित्तै रसुलभान् ।
जगन्मात्र प्राप्यं हरिचरण सेवं प्रपदनम् ॥

समालोच्य स्वस्थापयत सुविरामानुज मतम् ।
प्रपद्ये श्री० ॥२२॥

॥ अष्टाङ्गयोगं विनैव तत्वत्रयं प्रत्यक्षयति ॥

विधात्रादि स्तम्बावधिषु जड़ जीवाच्युतमयं ।
गुणैर्जात्या नाम्ना निगमनुततत्वत्रयमिदम् ॥
यदीयाच्छ्री भाष्याज्जयति सुखवृद्धयै सुमनसाम् ।
प्रपद्ये श्री० ॥२३॥

॥ इत्यनेन पूर्वावतारप्रणीत व्याकरणरीत्यैवैक्य शब्दमाह ॥

वदत्यैक्यं किञ्चित्पदमपि न सुप्तिङ्कृदुदितं ।
तथाप्य द्वैतीयः स्मरति न विभक्ति प्रकृतिजम् ॥
हठग्राहग्रस्तो यदमलवचः पथ्य विरहात् ।
प्रपद्ये श्री० ॥२४॥

॥ त्रिरूप कथनप्रकारेणापि पुनस्तत्वत्रयं षड् दर्शनैः प्रमाणयति ॥

हरिं जानामीति स्फुरति सुसमाधावपि यत—
स्त्रिरूपत्वं सर्वागमविहित मत्यन्त सुदृढम्
समक्षं नेक्षन्ते यदपिकुदृशः पालयति तान् ।
प्रपद्ये श्री० ॥२५॥

॥ श्रीसम्प्रदायेनैव मोक्षसिद्धिरित्याह ॥

नृणां मोक्षे लक्ष्याः क्वचिदपि शिवब्रह्म सनका—
गणेशोऽर्कः शक्तिः कपिल कणभुक् साङ्ख्य सुगताः ॥
यदा नासन्नारायण सुमहिषी प्रैरिरत यं ।
प्रपद्ये श्री० ॥२६॥

॥ श्रीरामानुजाचार्य्यस्य निर कुशमैश्वर्य्यमाह ॥

ततो विष्णो र्हस्ताङ्कितकनक पत्रेद्धमुभयो
र्विमूर्त्यो र्नेतृत्वं सुख नियममाश्रित्य यतिराट् ॥
चलत्स्थास्नूनज्ञानमुचद्लमुग्राहि जगतः ।
प्रपद्ये श्री० ॥२७॥

॥ शेषावतार वैभवमाह ॥

प्रचण्डैश्चार्वाकै दु रितधिषणैर्बौद्ध निकरैः
स्तमः संघैरन्धेजगति मुकुटार्का बलिभृतः
अनाचारैर्जैनै र्दशशतमुखादभ्युदितवान् ।
प्रपद्ये श्री० ॥२८॥

॥ एतेनाघटितघटनापटीयसीं शक्तिमाह ॥

अनाधार श्शेषः कथमिदमिति स्तम्भयति चेत्
स्वमाया माहात्म्यान्नट इवकुतर्कम्परि हरन् ॥
स्वरारोहन्नृत्यन्सुघटयति यो दुष्कर तरम्
प्रपद्ये श्री० ॥२९॥

॥ एतेनवेदाना मपि दुर्ज्ञेयत्वमाह ॥

महाश्चार्य्यागारं त्रिविध चिदचिल्लोक निवहं
समुद्यन्नश्यन्तं प्रतिकलयतश्शक्तिजलधेः ॥
अनन्तत्वोच्छेदाच्छ्रु ति रपि न यस्यान्त मगमत्
प्रपद्ये श्री० ॥३०॥

॥ इत्यनेन सर्वतो महीयस्त्व माह ॥

पृथिव्याद्या बृत्युत्तर दशगुणो विश्वनिचयो ।
यतोरोम्णां रन्ध्रे भ्रमति वयसाणु स्समभिव ॥

यदङ्केऽसौ शेते कथयितु मलं कस्त दुदयम्
प्रपद्ये श्री० ॥३१॥

॥ एनेन लक्ष्मणा रामस्य विस्वतोऽपिगौरवमाह ॥

प्रपञ्चे वैरिञ्चेऽतिथि सुयजनं वैष्णव कुलम्
कदाचि द्रीवेशार्चितरुचिरसौमित्रिविपिनम् ॥
उपेत्य श्री सीता रमण दयनीयो विजयते ।
प्रपद्ये श्री० ॥३२॥

॥ एतेन प्राचीन राजर्षि गणात् बान्धवपते र्गरीयस्त्वमाह ॥

दिलीपाद्यै भूपैरपि तनय सन्नामकरणे
ष्वदेयां श्रीरीवांधिपवरगुलाबो गुरुकरे ॥
यदाप्त्यै दत्वा दीव्यति सुविभुतां चामर युतां
प्रपद्ये श्री० ॥३३॥

॥ आत्यन्तिकमभूतपूर्वोपममाशीर्वचनमाह ॥

श्रैमत्क स्तनयोऽपि वान्धव जनोल्लासस्तमोदुर्नृपान् ।
जित्वा दिग्वनिताः करै र्भृशमलं कुर्वन्समं सूनुना ॥
श्री गोविन्द गुलाब कीर्ति सुरभे भूत्वाऽन्य देशाधिपो ।
मार्त्तण्डः प्रणमन् भवन्त मनिशं श्रीलक्ष्मणं
सेवताम् ॥३४॥

॥ एतेन ग्रन्थान्ते मङ्गलाचरणीयमित्युक्तप्रकारेणाशीर्वाद
रूपं मङ्गलमाह ॥

आम्नाय देव वन पुष्पमहीप जात ।
श्रीसम्प्रदायमकरन्दमहाब्धिमग्नाः ॥
सूरीन्द्र वृन्द मधुपावलयो रमन्तां
गोविन्दकीर्त्तिकृतिवान्धवराजधान्याम् ॥३५॥

॥ इत्यनेन स्वकृति साफल्यमाह ॥

केचिद्द्विपश्चित्प्रवरामहान्तो,
निर्मत्सराः सन्त्यघुनाऽपि शान्ताः
मत्वेति सूक्तं बदरीश तुष्ट्यै,
श्री लक्ष्मण स्तोत्र मभीष्ट पुष्ट्यै ॥३६॥

एकोन विंशतितमे हायनेऽशीति संयुत
चैत्रे राम नवम्यां श्री लक्ष्मणस्य स्तुतिः कृता ॥३७॥

श्री रीवाँ राज गुरु श्री १००८ श्री बदरीप्रपन्नाचार्य स्वामिविरचितं श्री लक्ष्मण महिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम्

❀श्रीमते रामानुजाय नमः❀

अथ
परमसूक्ष्म पञ्च संस्कार विधिः

आचमनाङ्गन्यास पूर्वकं प्राणायाम त्रयं कृत्वा, अद्येहेत्यादि सङ्कल्पं पूर्वं विधाय, शुद्धभूमिं दर्भैः परि समुह्य, तत्र तण्डुलान् प्रकीर्य्य, कुशेन त्रिरुल्लिख्य, तत्र दर्भं न्यस्य पञ्च गव्यं स्थापयेत्, तत्र क्रमः गोमूत्रंपूर्वे, दक्षिणे गोमयं, पश्चिमे पयः उत्तरे दधि, मध्ये घृत मीशाने कुशोदकम् ॥ गोमूत्रे विष्णुं, गोमये ब्रह्माणं, दुग्धेऽच्युतं दध्नि कृष्णं, घृते सवितारं, प्रणवादि नमोन्तै स्तत्तन्नामभिः सम्पूज्य. ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात इति विष्णु गायत्र्या, गोमूत्रम् ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियमिति गोमयम् ॥ आप्यायस्व समेतुते विश्वतस्सोम वृष्णियं भवा वाजस्य संगथेति क्षीरम् ॥ दधिक्रावणो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिणो मुखाकरत् प्राण आयूंषि तारिषदिति दधि ॥ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवोवः सवितोऽत्पुनात्यच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्य्यस्य रश्मिभिरिति घृतम् ॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे इति कुशोदकम् ॥ एवं पञ्चगव्यं कस्मिंश्चित्पात्रे संगृह्य; आपोहिष्ठेत्यालोड्य मानस्तोकेत्यनेनाभिमन्त्रयेत, ततो परिसरं कुर्य्यात् । पर्ण पुटे तण्डुल सर्षप हरिद्रा ताम्बूल पूगी फल नारिकेल द्रव्ययुतं चतुर्गुणितं त्रिगुणितं वा सित सूत्रं पीतं वा निधाय मूलेनाभिमन्त्र्य, ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय हुँफडित्यस्त्र मुद्रां प्रदर्श्य स्थापयेत् ॥ शुद्धायाँ भूमौ तण्डुलैश्चतुरास्रां प्रादेशमितां वेदीं

निर्म्माय कुशेन प्राची रुदीचीस्तिस्रस्तिस्रो रेखा उल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाङ्गुष्ठकनिष्ठकाभ्यां मृदमुद्धृत्यैशान्यामरत्नि मात्र देशे निरस्य तत्र दर्भं न्यस्य तदुपर्य्यत्रणं कलशं निधाय मूलेनापूर्य्य मूलेनैव तुलसीं गन्धञ्च निक्षिप्य ऊर्द्ध्वाग्रं कूर्चं पञ्च पल्लवं पञ्चरत्नानि श्रीफलं पूगीफलञ्च निधाय कण्ठे वस्त्रं वध्वा हरिद्रा कुङ्कमादिभिरालेप्य, तत्र श्री, भू, नीला सहितं भगवन्तमावाह्य, दक्षिणवामयोः पार्श्वयोः सुदर्शनं पाञ्चजन्यं च स्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य, ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः, ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः, इति सुदर्शन पाञ्चजन्यो सम्पूज्य देवस्य पश्चिमे भागे चतुरस्रं समं स्थण्डिलं निर्म्माय मूलेन कुशैस्सम्मार्ज्य स्रुवेण प्राचीरुदीचीस्तिस्रस्तिस्रो रेखा उल्लिख्योल्लेखन क्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्यैशान्यां प्रक्षिप्य, गोमयोदकेनोपलिप्य, प्रोक्ष्य तत्र दर्भं न्यस्याग्निस्थापनं कुर्य्यात्। ततोऽग्निमुद्वोध्याग्निं सम्पूज्य. दशवारमष्टाक्षरं जप्त्वा, वैष्णवाग्निं विभाव्य वन्हेउद्बोधस्वेति उच्चारयन् त्रिराज्याहुतीर्हुत्वा पर्य्यग्नि करणं कृत्वा, दर्भाँश्चतुर्दिक्ष्वास्तरणं परिधीन्दिक्षु स्थापयेत, वेद्याःपूर्वदिग्भागे समिद्द्वयं स्थापयेत, मूलेनाग्निं परिषिञ्च्य, मूलेनाग्नौदि समिधः प्रक्षिपेत् अग्नि मध्ये 'ऋतुस्नातया लक्ष्म्या सह भगवतः संयोगं विचिन्त्याहितगर्भां लक्ष्मीं ध्यात्वा तस्यामग्नेरुत्पत्तिं, विभावयेदेतदग्नेर्वैष्णवीकरणम्। ततो मूलेन मन्त्ररत्नेन चरमेण च हुत्वा; सुदर्शन पाञ्चजन्य मन्त्राभ्यां च हुत्वा, आचार्य्योऽन्तेवासिनं पञ्चगव्यं प्राशयित्वा, अनेन, ॐ यत्त्वगस्थि कृतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनं पञ्च गव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥ ततो रक्षां वध्नीयादनेन; जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्व भावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ॥ ततो दक्षिण भुजमूले सुदर्शनेनाङ्कयेदनेन, ॐ सुदर्शन महाज्वाल कोटि सूर्य्य समप्रभ ॥ अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गंम्प्रदर्शय। ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः ॥ ॐ पाञ्चजन्य निजध्वान ध्वस्त पातक सञ्चय। पाहिमां पापिनं घोरं संसारार्णव

पातिनम् ! पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः। ततः ऊद्र्ध्वं पुण्ड्रं कृत्वा भगवत्सम्बन्धि नामकरणं विधाय मन्त्रानुपदिशेत् ॥ ततः शङ्खचक्रे पञ्चामृतेन स्नाप्य, सम्पूज्य, गोदानं भूयसीञ्च कृत्वा भगवन्तमुद्रा-सयेत् ॥ इति परम सङ्क्षेपतः पञ्च संस्कार विधिः ॥ लक्ष्मणारामस्थ पं० श्री रामदुलारे शर्म्मणा संगृहीता हरिद्राग्राम निवासिना पं० चक्रधरेण संशोधिता ॥

अथ गुरु परम्परा प्रारम्भा

श्रीमते रामानुजाय ननः ॥ अस्मद्गुरुभ्यो नमः ॥ अस्मत्परम-गुरुभ्यो नमः ॥ अस्मद् सर्व गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्रीपराङ्कुशदासाय नमः॥ श्रीमद्यामुनमुनये नमः ॥ श्रीराम-मिश्राय नमः ॥ श्रीमते पुण्डरीकाक्षायनमः ॥ श्रीमन्नाथमुनये नमः श्रीमते शठकोपाय नमः श्री बिष्वक्सेनाय नमः ॥ श्रियै नमः ॥ श्री-धराय नमः ॥ अस्मद्देशिकमस्मदीयपरमाचार्य्यानशेषान् गुरून् श्रीमल्लक्ष्मणयोगि पुङ्गवमहापूर्णौमुनियामुनम् ॥ रामं पद्मविलोचनं मुनिवरं नाथं शठद्वेषिणं, सेनेशं श्रियमिन्दिरा सहचरं नारायणं संश्रये ॥१८॥ भारद्वाज कुलारविन्द तरणिं सौशील्यवारां निधि श्रीमच्छ्रीश पदारविन्दयुगुले सुप्रेमसीमावधिम् ॥ श्रीमद्वीर जनार्द-नार्य्यं चरणेष्वत्यन्त सक्तं सदा श्रीमच्छ्री बदरी प्रपन्न सुगुरुं वन्देदयैकार्णवम् ॥१६॥ नारायणस्य वरकिङ्करभावयुष्टं लक्ष्मी प्रपन्न करुणार्द कटाक्ष लक्ष्यम् ॥ श्रीमन्मुकुन्द पदपङ्कज चञ्चरीकं श्रीमज्जा-र्द्दन गुरुं सततं भजामि ॥४॥ श्रीमन्मुकुन्द पदपङ्कज भृङ्गराजं वेदा-न्तवेद्यपुरुषेऽर्पितस्वात्मभावम् ॥ दीनात्मनां करुणयार्तिहरं दयालुं लक्ष्मी प्रपन्न मुनिवर्य्यमहं प्रपद्ये ॥१४॥ श्रीराजगोपालपदाब्जभृङ्ग-मवाप्त शास्त्रार्थ बिशेष तत्वम् ॥ कात्याय नार्य्यान्वयपूर्णचन्द्रं श्रीमन्मुकुन्दार्य्यमहं भजामि ॥ ॥१६॥ नीलाद्रि नाथ कैङ्कर्य्ये दत्त-प्रवणमानसम् ॥ सौम्ययोगिकृपापात्रं श्रीगोपालमहंभजे ॥७॥

श्रीवेङ्कटार्य्यान्वय सिन्धुसोमं श्री श्री निवासार्य पदाब्जभृङ्गम् ॥ यम्बार वर्य्यस्य कृपावलम्बं श्रीसौम्य जामातृगुरुं भजामि ॥ ८ ॥ श्रीमद्वादिभयङ्करान्वय भजि श्री श्री निवासे गुर भक्तं स्वाश्रितरक्षणेस्थिरतमं शान्तं दयासागरं श्रीनीलाचलनाथसेवनपरं यम्बारमार्य्यं भजे ॥९॥ श्री मंत्र रत्नकुल वारिधि शीतभानुं रामानुजार्य्यतनयोत्तममम्बुजाङ्घ्रिम् ॥ सेवे सदा सज्जगतामपि नाथभाजं भेजं तथापि ममनाथ मनन्य भावम् ॥१०॥ शालङ्कायन वंश दुग्धजलधेराकासुधादीधितिं श्रीरामानुज योगिदेहजबरं तत्पादपद्माश्रयम् ॥ भक्तानुग्रहपारतन्त्र सुभगं श्रीश्रीनियासार्य्यसत्पौत्रं श्रेष्ठगुणं नमामि शिरसा श्रीश्रीनिवासं गुरुम् ॥११॥ श्रीनिवास गुरोः पाद सरसीरुहषट्पदम् ॥ वेदान्तद्वय सारज्ञं रामानुजगुरुम्भजे ॥१२॥ वेङ्कटार्य्य पदाम्भोजद्वन्द प्रवण मानसम् ॥ तत्सूनुतत्कृपापात्रं श्री निवासगुरुं भजे ॥ १३ ॥ वेदान्तदेशिक कटाक्ष विवृद्धबोधं कान्तोपयन्त्रियमिनः करुणैकपात्रम् ॥ वत्सान्ववायमनवद्य गुणैरुपेतं भक्त्या भजामि परवादि भयंकरार्य्यम् ॥१४॥ श्री शैलेश दयापात्रं धी भक्त्यादिगुणार्णवम् ॥ यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्य जामातरं मुनिम् ॥ १५ ॥ नमः श्रीशैलनाथाय कून्ती नगर जन्मते ॥ प्रसाद लब्धरपम प्राप्य कैङ्कर्य शालिने ॥१६॥ लोकाचार्य्याय गुरवे कृष्ण पादस्यसूनवे ॥ संसार भोगि सन्दष्ट जीव जीवातवे नमः ॥१७॥ श्रीकृष्ण पाद पादाब्जे नमामि शिरसा सदा ॥ यत्प्रसाद प्रभावेन सर्वसिद्धिरभून्मम ॥१८॥ वेदान्त वेद्यामृतवारिराशे वेंदार्थ सारामृत पूरमग्रम् ॥ आदाय वर्षं तमहं प्रपद्ये कारुण्यपूर्णं कलिवैरिदासम् ॥१९॥ नमो वेदान्त वेद्याये जगन्मङ्गलहेतवे ॥ यस्य वागमृतासार पूरितं भुवनत्रयम् ॥२०॥ श्री पराशर भट्टार्य्यः श्रीरङ्गेश पुरोहितः ॥ श्रीवत्साङ्क सुतः श्रीमन् श्रेयसे मेऽस्तु भूयसे ॥२१॥ रामानुजपदच्छाया गोविन्दह्वानपायिनी ॥ तदायत्त स्वरूपासा जीवान्मद्विश्रमस्थली ॥२२॥ योनित्यमच्युतपदाम्बुज युगम रुक्म व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ॥ अस्मद्-

गुरोर्भ गवतोऽस्य दयैकसिन्धो रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।२३।। कमलापति कल्याणगुणामृत निषेवया ।। पूर्ण कामाय सततं पूर्णाय महतेनमः ।। २४ ।। यत्पादाम्भोरुह ध्यान विध्वस्ताशेष कल्मषः ।। वस्तुता मुपयातोऽहं यामुनेयं नमामितम् ।। ।।२५।। अयत्नतोयामुनमात्मदासमलर्क पत्रार्पण निष्क्रयेण ।। यः क्रीतवानस्थित यौवराज्यं नमामितं राममभेयसत्वम् ।।२६।। नमः पङ्कज नेत्राय नाथश्री पादपङ्कजे ।। न्यस्त सर्वभ रायास्मत्कुलनाथाय धीमते।।२७।। नमोऽचिन्त्याद्भुतक्लिष्ट ज्ञान वैराग्यराशये ।। नाथायमुनयेऽगाध भगवद्भक्ति सिन्धवे ।।२८।। माता पिता युवतयस्तनयाविभूतिः सर्वं यदेवनियमेन मदन्वयानाम् ।। आद्यस्य नः कुलपतेर्वं कुलाभिरामं श्रीमत्तदङ्घ्रियुगुलं प्रणमामि मूर्ध्ना ।।२६।। भूतं सरश्च महदाह्वयभट्टनाथ श्रीभक्तिसार कुलशेखर योगिवाहान् ।। भक्ताङ्घ्रिरेणु परकालयतीन्द्र मिश्रान् श्रीमत्पराङ्कुशमुनिंप्रणतोऽस्मि नित्यम् ।।३०।। गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान् नरपति परिक्लृप्तं शुल्कमादातुकामः ।। श्वसुरममर बन्द्यं रङ्गनाथस्य साक्षाद्द्विज कुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि ।।३१।। श्रीरङ्गचन्द्रमसमिन्दिरया विहर्त्तुं विन्यस्य विश्वचिदचिन्नयनाधिकारम् ।। योनिर्वहत्यनिशमङ्गुलि मुद्रयैव सेनान्य मन्य विमुखास्तमशिश्रयामः ।।३२।। नमः श्रीरङ्ग नायक्यै यद्भ्रू विभ्रमभेदतः ।। ईशेशितव्य वैषम्य निम्नोन्नतमिदं जगत ।।३३।। श्रीस्तनाभरणं तेजः श्रीरङ्गेशयमाश्रये ।। चिन्तामणिमिवोद्भ्रान्तमुत्सङ्गेऽनन्तभोगिनः ।।३४।। नमोऽस्मदाचार्य्य परम्पराभ्यो नमो नमो भागवतव्रजेभ्यः ।। नमो नमोऽनन्त मुखामरेभ्यो नमः श्रियै तत्पतये नमोस्तु ।।६५।।

इति श्रीगुरुपरम्परा सम्पूर्णा ।।

श्री मन्मुकुन्द गुरुवर्य्य सुशोभि पीठे संस्थं सुलक्ष्मण बनान्तर भासमाने ।। रीवाँधिपादिनृप पूजित पाद द्वन्द्वं श्रीमज्जनार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।१।। श्री श्री पतीङ्गित इहावततार शेषः श्री भाष्यकार

इतियो भुवनेषु गीतः ।। जातं पुन-स्तमधुना जागतां हिताय श्रीमज्ज-नार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।२।। श्रीमत् त्रयी शिखर शेखर मात्म वेद्यं यत्लोक देशिक कृतंहि रहस्य तत्वम् ।। तादात्नरूप मतिभावन शील नेन श्रीमज्जनार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।३।। नैसर्गकी हरिकृपा सलि-लाकरश्च पादास्य पाणि सुमनोहर पौण्डरीकम् ।। सत्संप्रदाय जन-मञ्जु मिलिन्द पुञ्जं श्री मज्जनार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।४।। तत्व-त्रयाप्त मतवरिधि रुत्तमश्च पूर्णोयतीन्द्र मतिसत्सरितां प्रवाहै ।।सत्सङ्ग मोदकर पौर्णिम रोहिणीशं श्रीमज्जनार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।५।। नारा-यणो नर सखो भरताख्यवर्ष सं साधनाय तपसा हिमभूधरस्थ ।। तं लक्ष्मणाख्य विपिने च धृतावतारं श्रीमज्जनार्द गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।६।। अष्टाक्षराख्य पदवीं सुजयाप्तिकोयः स्वाभाविकेन चरमद्वयिकाँ समर्थाम् ।। कालत्रयेण भजते परमाप्त वित्तं श्रीमज्जनार्दन गुरुं शरणं प्रपद्ये ।।७।। विशिष्ठा द्वैतीयेऽहिमवृजन हं चन्दन तरुं महा भक्ति ज्ञानामित परिमलोद्गार गुणकम् ।। कराभ्यापादाभ्यां किसलय रुचिं श्री गुरुपदं प्रपद्ये व्यापारान्तर्रहत गर्ति लक्ष्मण वने ।।८।। प्रथम मिह मतल्ली ज्ञानभक्त्याप्तवल्ली ह्यजनि शुक गभीर प्रेमरुद्दाल वाले ।। कलित ललित शाखा सोधिताकारि सूनौ कुसुमित फलिता स्मिन्स्तं गुरं सं प्रपद्ये ।।९।। श्रीमल्लक्ष्मण काननाधिपगुरो स्वाङ्गमृणा लच्छविं वाचावैभव मस्यजीवन परं पियूषवत्सिञ्चनम् ।। सौशील्यं करुणा काटाक्ष कलनं निर्हेतकं मोक्षदं तंस्वाचार्य्यं वरं कथंन वृणुत प्रेम्णा जनाश्रेयते ।।१०।। रेरेमूढ़ जनाः कथंनश्रृणुत प्रेम्णास्पदं मे बचः काल व्याल कराल दंश विकालाः संजीवनं भेषजम् ।। राज्ञै तद्रघुराजसिंह कविना प्रेम्णासमा स्वादितं श्रीमल्लक्ष्मण काननाधिप गुरोर्दास्यं समाश्रीयताम् ।।११।। सुलक्ष्मणाख्य कानने सुभावु कै विभार्वितम् ।। हिमाद्रि मौलि नील रत्न माधवाद्वितीयकम् ।।१२।। प्रपन्न लोक जीवन प्रदं सुसाधनं परम् ।। जनार्दनस्य सद्गुरोः पदाम्बुजं स्मराम्यहम् ।।१३।। संत्प्रेम भक्ति जलमानस सत्सरोजं ।। श्रीमज्जनार्दन गुरुस्तुति

सद्लञ्ज ॥ तस्याश्रितालि सुखमस्तुतदङ्घ्रियुग्मे ॥ मंञ्चत्तरध्वनि सुगन्धि मिदं सरोजम् ॥१४॥ दामोदरेण क बिना निर्मिता सुप्रपतिका ॥ अस्मद्गुरो श्चरणयो रस्त्वेपाप्रेम मञ्जरी ॥१५॥

अथ श्रीमद्राजगुरुस्वामि श्री १००८ बद्री प्रपन्नाचार्य्य स्वामि प्रपत्तिका प्रारम्भा

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री नारायणराधनार्पित मना श्री मन्मुकन्दो गुरुस्तत्पादाब्जर सैकपान यधुपः श्री लक्ष्मणार्य्यो गुरुः ॥ श्रीमत्स्वामि जनार्दनो मुनिवरस्तत्पादपद्माश्रयो वन्दे श्रीवद्री प्रपन्न सुगुरुं तत्स्वामि भक्तं परम् ॥१॥ श्रीमन्त्र रत्न प्रतिवादी भयंकरार्य्यं श्री मज्जनार्दनगुरोः कृपयार्य्य गृह्यम् ॥ श्रीवान्धवेशमुकुटार्चित पादपद्मं श्रीमद्गुरुं हृदि दधे बद्री प्रपन्नम् ॥२॥ श्रीराघवेन्द्र गुण कीर्त्तन कीर्त्ति भाजं वैकुंठ नाथ चरणाप्ति कृतोरुशिक्षम् ॥ वेदांगशास्त्र सपुराण निकाय कीर्णं श्रीमद्गुरुं हृदि दधे वद्री प्रपन्नम् ॥३॥ श्रीमाधवाङ्घ्रि जलजाश्रित राग रक्तं श्रीरावणारि चरणामृत पान सक्तम् ॥ श्रीभाष्य लब्धचिदचित्परमात्म तत्वं श्रीमद्गुरुं हृदि दधे बद्री प्रपन्नम् ॥४॥ वेदान्तयुग्म जलजासव मत्त भृगं श्रीभाष्यभूषण विभूषित भासितांगम् ॥ श्रीकृष्ण भक्ति पर साधव संगिसंगं श्रीमद्गुरुं० ॥५॥ श्रीवासुदेव चरणैक युषांवरिष्ठं श्री मज्जनार्दन पदाब्जतलैक निष्ठम् ॥ आर्त्तार्त्ति नाशन रतं भवमोचनेष्टं श्रीमद्गुरुं० ॥६॥ अज्ञान कुञ्जतिमिरान्ध जनाय सूर्य्यम् रामानुजं पुनरपिद्वय कार्य धुर्यम् ॥ भक्ति प्रपत्तिपरिपालन हेतु जातं श्रीमद्गुरुं० ॥७॥ ध्यानाद्धृदुत्पल दलार्चित मा निवासं कारुण्यधाम दशमौलि सपत्नदासम् ॥

विद्वज्जनाब्धिमुदवृद्धयमृतांशु भासं श्रीमद्गुरुं० ॥८॥ श्रीवैष्णवेप्सित सुसाधनदत्त चित्तं सम्प्रार्थिदी न पद रक्षण नित्यवित्तम् ॥ दुष्ट स्कृतन्त्र जन तूल समूढवह्निं श्रीमद्गुरुं० ॥९॥ श्री सम्प्रदाय सरसी रुह भानुमन्तमामुष्मिकार्थ मिह लौकिक धीत्यजन्तम् ॥ मन्त्रत्रयाचल विहार समुचरिष्णुं श्रीमद्गुरुं० ॥१०॥ नारायणं वदरिकाश्रमलब्धवास मद्यापि तद्वनप्रपन्ननिरूढ संज्ञम ॥ श्रीसम्प्रदायधुरधारण आत्त गात्रं श्री मद्गुरुं० ॥११॥ अद्वैतवादिगणपन्नगवृन्दवीशं कामादि दोषदहनाय गिरीशजेशम् ॥ दुष्कर्मवद्धजनमोचन दृष्टशक्ति श्रीमद्गुरुं० ॥१२॥ देहात्मवादि दनुजेन्द्र नृसिंह रूपं घोरेन्द्रियारि दमने विदित प्रतापम् ॥ संसारसागरसुतारणपोतकल्पं श्रीमद्गुरुं० ॥१३॥ तत्वत्रयार्थ कुमुदाकरपूर्णिमेन्दुं दानार्थि शूरि गण कीर्त्तित कीर्ति चन्द्रम् ॥ दुःखाब्धिमग्नजनदत्तकरावलम्वं श्री मद्गुरुं० ॥१४॥ छात्रालिवृन्दमुखरीकृतपाद पद्मं विद्याचणै रपिसुपूजित मैरसद्म ॥ लोकोपतापसमनाय महौषधीशम् श्रीमद्गुरुं० ॥१५॥ मन्वादिवाक्य मुखदर्शनदर्पणाङ्गं सन्मुक्तिधामगमनाय विचित्रमार्गम् नारायणीयरसरङ्गसुरञ्जिताङ्गम् श्रीमद्गुरुं० ॥१६॥ राजीवलोचनकृपाभ्युदयोपपन्नं सौमित्रिकाननसुरशरण सन्निषण्णम् ॥ श्रीबाँधवेशशुभाकमनया प्रसन्नं श्री मद्गुरुं० ॥१७॥ रीवाँनृपालकरचामरवीज्यमानः सामात्यराजभटसङ्घजयोद्यमानः ॥ विद्वद्वरस्तुति भिरीडितसच्चरित्रः श्रीमद्गुरुर्विजयते बदरी प्रपन्नः ॥१८॥ मोहं ध्वंसयते मदं क्षपयते लोभं तथा लुम्पते कामं क्षीणयते क्रुधं विलयते दुःखं परं हिंसते ॥ मात्सर्य्यं लवते प्रणम्र मवते विज्ञान वागा स्वकैस्तस्मै श्रीबदरी प्रपन्नगुरवे स्यानमे नमः साञ्जलि ॥१९॥ भजत गुरुदपदाब्जौ संसृति व्याधि जायू नृपति मणि गुलावेनाश्रितौ प्रेम तो यौ ॥ विरहितमपि याभ्याँ मोक्ष दाता न विष्णुः शरणमभि प्रपद्ये सर्वदा तौ हि मूर्ध्ना ॥२०॥ श्री स्वामिनामङ्घ्रि सरोरुहाणां प्रपत्तिका माल्यमिवार्पितेयम् ॥ भूयान्मनो मे रसलम्पटालिर्महत्सु तच्चक्रधरेण पत्सु ॥२१॥

इति श्रीमद्रीवाँराजगुरु श्री १००८श्रीबदरी प्रपन्नाचार्य्य स्वामि-प्रपत्तिका, श्रीमत्स्वामि चरणारविन्द मकरन्द मिलिन्देन पं० चक्रधर प्रपन्न रामानुज श्री वैष्णव दासेन

निर्मिता समाप्ता ॥

अथ श्रीमद्रीवाँराजगुरु श्री १००८ श्रीबदरी प्रपन्नाचर्य स्वामि सुप्रभातम्

❀ श्रीमते रामानुजाय नमः ❀

श्रीमद्धीरजनार्दनो मुनिवरः स्वाचार्य्य लब्धं महच्छ्रीमत्येव समर्थ्य वैष्णवधुरं यातः पदं वैष्णवम् ॥ धत्स्वोत्थाय शिरःसु माल्य-मिव तत्कैङ्कर्य्यकार्य्यं गुरोः श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१॥ श्रीमन्मुञ्च शुभाशनं भगवतः सम्पादयाराधन, मायात्येव निशस्तमिश्र गहनं छिन्दन् वहिस्थं रविः ॥ एको मानव हृत्तमिश्र शिखारोत्पाटे भवान् पण्डितः श्रीमच्छ्री वदरीप्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥२॥ योगं मुञ्च वहिः प्रसारय दृशौ पश्यागतान् सन्निधि शिष्यान् पावनपावनाय भवते साष्टाङ्गकृत्यायतान् ॥ दूरा दुज्झित पापताप सगणाधीशान्नमस्कुर्वतः श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँसते सुप्रभातं शिवम् ॥३॥ आदर्शः शुचितोय पूर्ण शतशः श्रीनारिकेला-न्वतैः पूर्णं पात्र मुपर्य्यथो सुविमलं सत्पल्लवं सुन्दरं सौवर्णं वसना-वृतञ्च पुरतः पद्मं पदाब्जं हरेः पश्यैतान् वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्र-भातं शिवम् ॥४॥ शिष्यास्तेहि पदक्रमादिभिरिमे मन्त्रं यथा स्यात्तथा वक्त्रेकतयैव सुस्वरतया गायन्ति सङ्गीतवत् ॥ मन्त्रान्वेद समुत्थिता-न्समधुरैर्वाद्यैश्च कर्णप्रियैः शृण्वेतान् वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥५॥ पानीयं तव शुद्धमेव निहितं शिष्येण गन्धान्वितं शुद्धे निर्मलिते घटे सुरधुनी मध्योद्धृतं पावनम् ॥ वक्त्रक्षालन कर्मणे

सुपिहितं वस्त्रेण चार्द्रेण तत् श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥६॥ श्री भाष्याध्ययनेच्छवः सुमतयो ब्राह्मे मुहूर्त्तेऽधुना त्वत्पादाब्ज मुपासका ह्यु पगता वाञ्छन्ति ते चोत्थितिम् तच्छिद्धां दिशि प्रार्थि वर्गकुशलाः कुर्वन्ति भूरिस्तुतिं श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥७॥ स्नानार्थं रद्धावनञ्च विमलं चौमाम्बरं गाङ्गवाः पीठं कूर्मविधं शुभं सहृदयैः शिश्यैनु तं पादुकम् ॥ आनीतं तिल माज्य मैक्षवयुतं हव्यं शुभं याज्ञिकम् श्री मच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥८॥ सूर्य्यश्चोदय पर्वतस्य निकटं प्राप्यस्वकीयैः करैः पद्मामार्ज्जनकारकैरिव तमः सम्मार्ज्जकाष्ठान्तरात् ॥ भूमी भृत्कुहरेषु गुच्छिततया प्रायः क्षिपन्नेति चोत्तिष्ठ श्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥९॥ दिव्यैः श्रीतुलसीदलैः सकुसुमैः साहस्र नाम्नांततैः पूजाथ भवतां गतिं भगवतस्त्वत्पूजकः काङ्क्षति ॥ उत्तिष्ठ प्रणिधेहि दैनिकविधिं सर्वोपकाराञ्चितम् श्री मच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१०॥ चन्द्रः पश्चिम पर्वत्ते तव मुखं चालोच्य पद्मास्पदं भाविक्रोध परस्सुरक्तवपुषा स्पर्द्धातिरेकादिव ॥ सञ्चिन्त्य प्रतिकारकान्सुविविधोपायान्निरस्तोव्रजेत् श्रीमच्छ्री वदरीप्रपन्न भगवँसते सुप्रभातं शिवम् ॥११॥ चन्द्रं वीक्ष्य निरस्तमेव विहगाः नाना प्रकारैः स्वरै राक्षिप्यन्त इवातिशायति रवाः सम्बोधयन्तिस्वयम् ॥ एतत्कौतुक मद्भुतं दिशि दिशि प्रायः प्रभूतं मुहुः पश्यैतद्वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१२॥ वृक्षाः सम्प्रति नीच देशमसकृद्रात्रौ तुषारान्मुहुः सङ्गृह्यग्लपयन्ति निर्म्मलतया स्नाता इवेहासते त्वंस्नाहीत्युपदेश कारकतया चेष्टां प्रदर्श्याऽधुना श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१३॥ घण्टानां निनदैरनन्त शयनं श्रीजानकी जीवनं श्री नीलाद्रि पतिं कुशस्थलि पतिं श्रीदीननाथं प्रभुम् ॥ त्वञ्चोत्तिष्ठ विबोधयन्ति विबुधाः श्रीभाष्यकारं गुरुं श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१४॥ श्रीमल्लक्ष्णवाग नन्दनवने शब्दोऽभितः श्रूयते पुष्पस्रक् तुलसीदलं बहुविधं चानीयतां मालिकाः ॥

किं किं ब्रूत सुकिङ्करा विधिकरान् भूयस्त्वरा सम्पराः, पश्यैतान् वदरी प्रपन्न सुगुरो ते सुप्रातं शिवम् ॥१५॥ च्योणीन्द्रं शरणागतं गुण गणैराढ्यं गुलाबाभिधं, तत्कीर्त्तिं कविताङ्गणे विपुलयन् स्वाशीः सुमैरर्च्चयताम् ॥ अस्मान् शाधि गुरुस्तुतिं कुरुतथा श्रीलक्ष्मणस्य स्तवम् श्रीमच्छ्री वदरी प्रपन्न भगवँस्ते सुप्रभातं शिवम् ॥१६॥ श्रीमन् व्यास पराशरादि मुनयः स्वं ब्रह्मदत्तं भरं, श्री मत्येय समर्प्य दिव्य नगरं याताहियन्मण्डलम् ॥ सोऽयं तूदय पर्वतस्य सविधं चायातवान् भानुमान्पूर्वं चिन्तय ताः क्रियास्तु सुगुरो ते सुप्रभातं शिवम् ॥१७॥ येमानवाःप्रतिदिनं गुरुसुप्र भातं प्रातः पठन्ति प्रयताः सुगुरं स्मरन्तः ॥ तेयान्ति विष्णु पदवीं समलं विधूय सत्येन जल्पति हि चक्रधर प्रपन्नः ॥१८॥ इति श्रीमद्रीवाँ राजगुरु श्री १००८ श्री वदरी प्रपन्नाचार्य्य स्वामि सुप्रभातम् ।

रीवाँ राज्य मण्डलान्तर्गत हरिद्रा ग्राम निवासिना ।

पं० श्रीचक्रधरेण

कृतम्

श्रीमद्रीवाँ राजगुरु श्री १००८ श्री बदरी प्रपन्नाचार्य्य स्वामि सुमङ्गलम्

❀ श्रीमते रामानुजाय नमः ❀

श्री रीवांधिपतेर्गुणौघ मनिशं स्वाशीर्भि रावर्णयन् सालङ्कारमकारि येन सरसं श्री लक्ष्मणस्य स्तवः ॥ याता यो निगमागमस्य सुतरां साङ्गस्य पारं परं तस्मै श्री बदरी प्रपन्न गुरुवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥१॥ छात्राणां गुण पुञ्ज पूरित हृदां सम्पालनैकव्रती विद्या ज्ञान विवेक पूर्ण हृदयःकारुण्य बारां निधिः ॥ गण्योऽग्ये विबुधेषु दानि निकरे बर्णि प्रवीणेच य स्तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरुवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥२॥ दाक्षिण्यं सुजने बुधेऽर्थिनिवहे श्रीवैष्णवे बन्धुता

सौशील्य क्षमता दयोहि सहजाः सर्वे गुणाः पुण्यदाः ॥ आर्त्तत्राण परायणस्य सततं यद्दीन वन्धोः प्रभो स्तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥३॥ सारासार विचारणाति निपुणं यं पण्डितं कोविदाः काव्यै श्रारुतमै निंजं सुवचनं स्तुत्वा पुनन्त्यन्वहम् ॥ यं छात्राः समुपास्य पारमपरं गच्छन्ति शास्त्राम्वुधेस्तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥४॥ विद्या भक्ति प्रपत्ति सुष्टु कविता नार्य्यः समेत्याऽधुना निष्पापं रचयन्ति कीर्त्तिमतुलां प्रेम्णाश्लिपन्त्यो दृढ़म् ॥ गायन्तीव दिगन्तरेषु सुयशः यत्पूर्ण चन्द्रप्रभं तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥५॥ यो भक्त्या ह्यु प ढौकयत्यनुदिनं शिष्यं गुलाबाभिधं भक्त्या यत्पर तन्त्रतामुपगतो भूयः प्रपत्या चयः ॥ श्रीभाष्याद्य वलोकनेन दलितं लिप्तं मलंह्यात्मन स्तस्मै श्री बदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥६॥ वात्सल्याऽऽर्जव सत्य धैर्य्य करुणा क्षान्त्यादि सर्वे गुणाः दृष्ट्वा काल कलिं विभीय विपुलां पृथ्वीं विलोड्याऽधुना ॥ लब्ध्वा ते सुखमासते गत भयाः यं धेयमापत्सु तं तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥७॥ चेतोऽलिश्चलतां विहाय निवसत्यङ्घ्र्यब्ज कोशे हरेः पाणिः श्री तुलसी दलार्पण विधौ नित्यं स्तवे यद्वचः ॥ बुद्ध्याऽनन्यतयैव चिन्तति परं सर्वात्म भावेन य स्तस्मै श्री बदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥ ८ ॥ भक्त्युद्रेक प्रपत्ति रस्मिभिरजस्याङ्घ्र्यब्ज कोशौ दृढं धृत्वा स्वे हृदयाम्वुजातसदने निर्य्याण मागाहते । वाह्याभ्यन्तर दोष शून्य हृदय स्तत्रैव दृष्टिं ददत तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥९॥ प्रापच्छील जनार्द नाद्भगवतो विज्ञान राशिं महान् दृष्ट्वा मुक्तिपथं सुभक्ति जनितं सक्तं गुरोः पादयोः ॥ त्यक्त्वा लोक सुखैषणां भगवतो ध्यानेऽनुरक्तोऽनिशम् तस्मै श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥१०॥ श्रीमद्भागवतै र्निवेवित पदो ह्येकान्तिभिः शूरिभिस्तेपां संसृति मूललुम्पन करै र्वेदोपदेश।सिभिः ॥ यो मन्त्रार्थ रहस्य मुत्तमतया तापत्रयोत्पाटकं विनूते श्री वदरी प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा॥११॥

तुच्छं भोग विनश्वरं जगदिदं ब्रह्मात्मकं भावयञ्चेतोऽलि भ्रमयञ्ज-
नार्द नगुरोः पदाब्ज कोशेऽभितः ॥ आयातानपि भोगकान्स्वयमिह
त्यक्त्वा च यो निर्वृतः तस्मै श्री वद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा
॥१२॥ संसारार्णव सन्तरिष्णु रिह यो लेभे सुशास्त्रावलेः श्रीशांघ्रि
तरणिं निरापदममुं तच्चालकान् तान् गुरून् ॥ निश्चित्य स्वपराभि
तारण मनूपायञ्च यः साम्प्रतं तस्मै श्री वद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं
सुर्वदा ॥१३॥ स्वल्पञ्चोपकृतिं परस्य विपुलां कृत्वा हृदा गायति
कुर्वन्नेव परोपकारमनिशं धनत्तेन तद्योहृदि ॥ नादत्तोऽपकृतिं परस्यहृद
येऽपि स्वाश्रितानां कथं तस्मै श्रीवद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा
॥१४॥ अज्ञानतृणदानिरासन रवि र्मोहाब्धि कुम्भोद्भवः मायावादि-
करीन्द्रमर्द नकलाकण्ठीरवाधीश्वरः ॥ भूयः संसृति कारकादि कुगुण
ग्रामेन्धनोपवर्धुः तस्मै श्री बद्री प्रपन्न गुरुवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ।१५।
कामक्रोधमदादिलोभकुहकव्यामोहमात्सर्य्यरागद्वेषाहि विभञ्जनेन
रथवा हस्यानुजोऽजप्रियः ॥ दुर्दैवाध्यपनोदनेऽतिकुशलोऽहङ्कारशैला-
शनि स्तस्मै श्रीवद्री प्रपन्न गुरुवेऽस्तान्मंगलं सर्वदा ॥१६॥ श्रीमद्वै-
ष्णव तोयजालयवनप्रोल्लासनेऽहर्पतिः कार्य्याकार्य्ये बिचारणामर
गुरुस्त्र पादकौ यो गतिः ॥ सद्विद्याश्रुतिशारदीपशिखरो भाष्यार्थचिन्ता-
मणि स्तस्मै श्री बद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान् मङ्गलं सर्वदा ॥१७॥
श्रीभाष्यामननेन येन दलितं लिप्तं मलं मायिकं यश्चोपासनया
त्रिपादपदवीं कृत्वाऽस्थितोहस्तगाम् ॥ श्रीरामानुज साम्प्रदायिकमहा-
सिद्धान्त निर्वाहक स्तस्मै श्री बद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान्मङ्गलं सर्वदा
॥१८॥ वेदान्तद्वय सार सागर स मुल्लासेन्दुविम्वप्रभम् नित्यं चक्र
धरेण सौख्य मातुलं यं स्तुत्य संलभ्यते ॥ तस्मात्तस्य सुमङ्गलं भगवतो
रामानुजात्काङ्क्षति तस्मै श्री वद्री प्रपन्न गुरवेऽस्तान् मङ्गलं
सर्वदा ॥१९॥ श्रीमत्स्वामि पदारविन्द मकरन्दस्याऽऽमिलिन्दात्मकः
भूयश्चक्रधरः समुत्थित भुजो जोघुष्यते दीर्घवाक् ॥ ये प्रेम्णा प्रपठन्ति

मंगल मिदं नारायणाचार्य्ययोर्भक्ति प्राप्य भवन्ति मोक्षपदवी भाजो ध्रुवं ते जनाः ॥२०॥

इति श्रीमद्रीवाँराजगुरु श्री १००८ श्री वदरी प्रपन्नाचार्य्य स्वामि सुमंगलम्

रीवाँ राज्य मण्डान्तर्गत हरदीनामकग्राम निवासिना पं० श्री चक्रधरेणकृतं

समाप्तम्

॥ श्रीमतेरामानुजायनमः ॥

अथ पूर्वाचार्य्याणां प्रतिनिधित्वेन उत्तराचार्य्याणां षट्पदी वर्णनम् ॥

व्याख्यापयन्ये द्रविणे प्रपत्तिं पूर्वर्षयोऽदभ्रदयो विरक्ताः ॥ संज्ञान्तरं प्राप्य पराङ्कुशाद्यास्ते पुण्य भूमौ पुनराविराशन् ॥१॥ श्री रंग योगीन्द्र मुकुन्द गुर्वोः कारुण्य लब्ध श्रुतिमौलि वेद्यान् ॥ लोकोत्तरानुत्तर देशिशन्द्रा ब्लीशाब्धि पद्म भ्रमरांस्मरामः ॥२॥ रामाचार्य्य मुनिं जनार्दनगुरुं राम प्रपन्नं ततो मेघस्याममथाश्रये परमहंसार्य्यं फलाहारिणम् ॥ रामान्तादि तुलाभिधं रघुन्नृपं गोविन्द दासांत्रिकम् शास्त्रीन्द्रश्च सुदर्शनं शठरिं पुं गोपालमश्वाननम् ॥३॥ श्रीनार सिंहं वलराम सूरिं श्री वासुदेवञ्च महा वनञ्च ॥ श्री रामामि श्रं कमलाभ नेत्रं वंशीधरं वाल मुकुन्द युग्मम् ॥ विश्चकू चमुं श्रीवलभद्र दासं गोविन्द युग्मं रघुनाथ दासम् ॥ श्री राघवं श्री मथुरा प्रपन्न श्री शालिकं भागवत प्रधानम् ॥ ध्यायेदिदं विश्वजनीनमेवं वीताभिमानोऽन्तिम सूरि वन्दम् ॥ प्रातस्समुत्थाय विशुद्ध धीर्य्यः भूयात्स यै भागवतान्तरंगः ॥६॥ सर्वेषां कृतिनां चरन्ति गुरवः कैङ्कर्य्ये निष्ठां हरेः श्री रामानुज योगिनायकमंणिः श्री पाद पद्मालयाः भोग्यामृष्टा क्षर मन्त्र रत्न चरमश्लोकानु सन्ध्यायिनों वन्द्या भाग वतोत्तमाः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥७॥ इति श्लोक प्रमाणेन पुण्यश्लोकानां प्रातस्मरणम् ॥ मनोर्थ साधनम् ॥

अस कहि चलेऊ वालि सुत फिर आयउ हनुमन्त।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मंगन भये भगवन्त॥

मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहु सो दसरथ अजिर विहारी॥
करि प्रणाम रामहि त्रिपुरारी।
हर्षि सुधामय गिरा उचारी॥
दीन दयाल विरद सम्हारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥
कीन चहौं निज प्रभुकर काजा।
मोहि न कछु वांधे कर लाजा॥
सब से सेवक धर्म कठोरा।
सिरभर चलौं उचित अस मोरा॥
नीच टहल सव घर कइ करिहौं।
पद विलोकि फव सागर तरिहौं॥

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या (गोपिन के) हितकारी। हरषित महतारी मुनिमन हारी अदभुत रूप निहारी॥ लोचन अभि-रामा तनु घन श्यामा निज आयुध भुजचारी॥ भूषण वनमाला नयन विसाला सोभा सिंधु खरारी॥

वह सोभा समाज सुख कहत न बनत खगेस।
वरनहिं सारद सेष श्रुतिं सोरस जान महेस॥

जब ते. राम व्याहि घर आये।
नित नव मंगल मोद वधाये॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा।
नाम सत्रुहन वेद प्रकाशा॥
महा मन्त्र मणि विषय व्याल के।
मेटत कठिन कुजङ्क भाल के॥

सखा धर्म मय अस रथ जाके ।
जीत न कवहुं कौन रिपु ताके ॥
चढ़ रथ सीय सहित दोउ भाई ।
चले वनहिं अवधहिं शिर नाई ॥
प्रविस नगर कीजय सब काजा ।
हृदय राखि कौशल पुर राजा ॥

स्वयं सिद्ध सकाम नाथ मोहि आदर दयउ
अस विचारि युवराज पुलकित तन हरषित भयउ
करेहु दण्डवत प्रभु सें तुम्हहि कहउँ कर जोरि
बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि

अहल्या भाषा श्री हरिचरण गंगार्पिततनुः प्रयागेऽलोपेश्रीमति सुसदना साधु हृदया ॥ रमादासी सेवा जित परम हंसोक्ति सुरभिः सतां भक्ति द्वारं सकल जन भोक्त स्य कुरुताम् ॥

❀ समाप्तः ❀

पुस्तक प्राप्ति स्थान
श्री लक्ष्मण बाग
रीवाँ
विन्ध्य प्रदेश

द्वितीय प्राप्ति स्थान
श्री रामादासी बाई
८३ अलोपी बाग
गुफा नम्बर
प्रयाग

मुद्रक—हर प्रसाद वाजपेई, कृष्ण-प्रेस, २६, हीवेट रोड, इलाहाबाद ।



कृष्ण-प्रेस, प्रयाग ।